भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 308 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 02 नवम्बर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

पटना की हुंकार रैली में नरेंद्र मोदी ने बचा ली थी हजारों की जान

पटना (एजेंसी)। आठ साल पहले 27 अक्टूबर 2013 को गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री व वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की सूझबूझ ने पटना में हजारों की जान बचाई थी। हम बात कर रहे हैं पटना में आयोजित हुंकार रैली के दौरान गांधी मैदान में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों की। धमाकों में छह लोगों की जान गई थी तथा 80 से अधिक लोग घायल हो गए थे। अगर इस दौरान लाखों की भीड़ में भगदड़ मच जाती, तब भारी तादाद में जान-माल की क्षति होजी। लेकिन मोदी की अपील काम कर गई और लोगों ने धैर्य नहीं खोया। भगदड़ नहीं मची। इस

मामले में एनआइए कोर्ट नौ आतंकियों को सजा दे दी है। कोर्ट पहले ही आतंकी हैदर अली, नुमान अंसारी, मजीबुल्लाह, उमर सिद्दिकी, फिरोज असलम एवं इम्तियाज आलम सहित नौ को दोषी करार दे चुका था। इस मामले के 10 आरोपितों में से एक फकरुद्दीन को रिहा कर दिया गया है। पटना के गांधी मैदान में साल 2014 के लोकसभा चुनाव के लिए एनडीए की हुंकार रैली थी। इसे संबोधित करने भारतीय जनता पार्टी (ँह्र) की ओर से एनडीए के प्रधानमंत्री चेहरा (इश्र ईंम) बनाए गए गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी पटना आए थे। उन्हें सुनने के लिए गांधी मैदान और आसपास के इलाकों में लोगों की भारी भीड़ थी। उनका संबोधन सुनने के लिए लोग ट्रेनों व बसों भी आ रहे थे। इस कारण कुछ किलामीटर दूर स्थित पटना जंक्शन से गांधी मैदान तक सड़कों पर भी भारी भीड़ थी। हर तरफ लोग ही लोग थे। इसी बीच पटना जंक्शन पर पहला बम फटा। कुछ ही देर बाद गांधी मैदान के इलाके में भी सिलसिलेवार बम फटने लगे। विस्फोट के बीच मंच से नेताओं का संबोधन जारी रहा।गांधी मैदान के आसपास हुए आधा दर्जन बम धमाकों के बावजूद रैली में आई भीड़ डटी रही। बम धमाकों की आवाज को पटाखा समझकर लोग उत्साह में मोदी जिंदाबाद के नारे लगाते रहे। हालांकि, मंच पर मौजूद नेताओं और पुलिस बल को इसकी जानकारी हो चुकी थी कि धमाकों की आवाज बम की है। मगर लाखों की भीड़ के बीच अगर यह बात बता दी जाती तो भगदड़ मच सकती थी। खतरा इसलिए भी ज्यादा था कि मैदान के बाहर भी भारी भीड़ थी और धमाके भी गेट के आसपास ही हुए थे।ऐसे में बीजेपी नेताओं ने भगदड़ रोकने को मंच से ही कमान संभाली। वे लगातार यह कहते रहे कि उत्साह में पटाखे न छोड़ें। मैदान के बाहर धीरे-धीरे निकलते रहें। इस बीच एंबुलेंस के सायरन की आवाज अनहोनी की आशंका जताती रही, मगर धमाकों से अनजान लोग शांत बने रहे।

किसान आंदोलन पर हरियाणा सीएम खट्टर का बयान, सुलह का सिर्फ एक ही विकल्प

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा है कि कृषि कानून न केवल किसानों के हित में है बल्कि यह उत्पादक बढ़ाने में सहायक होंगे। खट्टर ने 56 वें हरियाणा दिवस तथा सरकार के सात साल पूरे होने पर आज यहां एक संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल पर यह यह बात कही। हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर ने किसानों का आह्वान किया कि किसी भी मुद्दे का हल बातचीत के माध्यम से ही सम्भव है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार सिंघु और टिकरी बार्डर खुलवाने के लिये प्रयासरत है और उम्मीद है कि जल्द ही इसका हल निकलेगा। बातचीत के माध्यम से ही समस्या का समाधान हो सकता है।खट्टर ने कहा कि इस मामले में गृह सचिव की अध्यक्षता में राज्य सरकार ने कमेटी गठित कर रखी है। बातचीत अब भी जारी है। इसके अलावा उच्चतम न्यायालय ने भी इस मामले में संज्ञान लिया है। बॉर्डर बंद होने से आवागमन करने वाले लोगों के साथ स्थानीय निवासी और व्यापारी बहुत परेशान हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि रास्ता रोके बैठे लोगों को स्थानीय लोगों, व्यापारियों और इस मार्ग पर आवागमन करने वाले आम लोगों की यह समस्या समझनी चाहिए और बातचीत के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि कृषि कानूनों का सम्बंध केंद्र सरकार से है हरियाणा का इनसे कोई लेना देना नहीं है अलबत्ता सरकार इन कानूनों का समर्थन करती है। एक सवाल पर उन्होंने कहा कि नौकरियों में पारदर्शिता उनकी सरकार का मुख्य लक्ष्य है। हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग और हरियाणा लोक सेवा आयोग से हो रही भर्तियों में पूरी पारदर्शिता बरती जा रही है। उनकी सरकार ने बिना पर्ची और खर्ची के गत सात साल में 83 हजार सरकारी नौकरियां दी है।

गडकरी बोले- एफिल टावर से भी अधिक आकर्षक होगा गोवा का यह पुल, पार्किंग की भी व्यवस्था

पणजी (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवार को कहा कि गोवा में जुआरी नदी पर बनने वाले पुल पर प्रस्तावित व्यूइंग गैलरी फ्रांस में पेरिस के प्रसिद्ध एफिल टॉवर से बेहतर आकर्षक होगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पणजी-मडगांव राजमार्ग पर मौजूदा पुल के समानांतर बनने वाले पुल के अगले साल सितंबर तक पूरा होने की उम्मीद है, लेकिन इससे पहले कम से कम एक लेन खोलने का प्रयास किया जा रहा है। .गडकरी ने कहा, ठजुआरी पुल पर काम चल रहा है। हमने इस पुल के हिस्से के रूप में दो टावरों का निर्माण करके एक देखने वाली गैलरी की योजना बनाई है। यह एफिल टॉवर से बेहतर पर्यटक आकर्षण होगा। इसमें विशेष स्थान के अलावा एक रेस्तरां और आर्ट गैलरी होगी।लुटोलिम और दक्षिण गोवा में वर्ना में स्थित एक औद्योगिक एस्टेट के बीच राष्ट्रीय राजमार्ग के लिंक का उद्घाटन करने के लिए एक समारोह को संबोधित करते हुए, गडकरी ने कहा कि पुल के नीचे पार्किंग की जगह होगी और लोग नावों में भी वहां पहुंच सकते है।गडकरी ने यह भी कहा कि मुंबई-गोवा राष्ट्रीय राजमार्ग पर काम अगले डेढ़ साल में पूरा कर लिया जाएगा। कुछ पैकेजों

में आने वाली कठिनाइयों को अब दूर कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय मनोहर परिकर का सपना था कि वे राज्य में इस तरह का बुनियादी ढांचा तैयार करें और उनके द्वारा प्रस्तावित परियोजनाओं को अब पूरा किया जा रहा है।मंडोवी नदी पर पुल, जिसका उद्घाटन परिकर की मृत्यु (मार्च, 2019 में) से कुछ समय पहले किया गया था, का उपयोग प्रतिदिन 66,000 वाहनों द्वारा किया जा रहा था, जिससे पणजी में ट्रैफिक जाम कम हो गया था।

धनतेरस व दीपावली के शुभ अवसर पर
जनपदवासियों को हार्दिक शुभकामनायें।

श्यामकान्त शुक्ला उर्फ लहरी भैया
मिर्जापुर, प्रयागराज जनपद के एक मात्र लोक प्रिय समाजसेवी
कोरोना के साथ – साथ सामाजिक, धार्मिक एवं स्पोर्ट्स के कार्यक्रमों में विशेष योगदान के लिए समर्पित व्यक्तित्व
समाज सेवा करना ही दृढ़ संकल्प

शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, शिक्षार्थियों
एवं सम्मानित जनपदवासियों को
धनतेरस एवं दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रमन मिश्र
अध्यक्ष
प्रबंध समिति

आनंद पाण्डेय (एडवोकेट)
मंत्री
प्रबंध समिति

प्रो० मनोज मिश्र
प्राचार्य
एमडीपीजी कालेज, प्रतापगढ़

समस्त जनपद वासियों को धनतेरस, दीपवली की हार्दिक शुभकामनाएं

CHANDRA SHEKHAR SINGH GROUP OF INSTITUTIONS

1 HIGH RESULTS 2 EXCELLENT PLACEMENT RECORD 3 DRUG INSPECTOR, GOVT. ANALYST HOSPITAL PHARMACIST 4 GPAT ACADEMIC ATMOSPHERE 5 PRACTICAL ORIENTED

REGISTRATION/ ADMISSION OPEN

FOUNDER
SHRI CHANDRASHEKHAR SINGH

UG COURSES OFFERED

B.A.M.S. (5½ Years)
Approved By CCIM, New Delhi
(Ministry of Ayush,Govt. of India)
Affiliated to Prof. Rajendra Singh (Raju Bhaiya) Rajya Vishwavidyalaya, Prayagraj.U.P.

B. PHARMA (4 Years)
College Code - 552
Approved by P.C.I. & A.I.C.T.E. New Delhi
Affiliated to A.K.T.U. Lucknow U.P.

HIGHLIGHTS
- Compulsory Practical Performance
- Disciplined Grooming & Out Look
- Organized Infrastructure
- Lush Green Campus
- Merit Scholarship
- Excellent Study

DIPLOMA COURSE OFFERED
- DIPLOMA IN PHARMACY (Ayurved 2 Years)
- G.N.M. (Ayurved 3½ Years)
(Affiliated To Ayurvedic & Unani Tibbi Chikitsa Paddhati Board Lucknow U.P.)
- CCYP (Certificate Course in YOGA Practice)

HOSTEL FACILITY AVAILABLE

16 KM AWAY FROM PRAYAGRAJ RAILWAY STATION AT ALLAHABAD-KANPUR HIGHWAY
10 KM FROM AIRPORT BAMRAULI
GT ROAD NEAR THANA PURAMUFTI, (KOILAHA) KAUSHAMBI (U.P.)

HELPLINE
(AYURVED) 7524037425
(PHARMACY) 9329582143, 9300640664, 9936764324
www.cscp.co.in | www.cssas.org | cssas.allahabad@gmail.com | csscp.allahabad@gmail.com

खबर संक्षेप

पानी से भरे गड्ढे में मिला युवक का शव, नहीं हो पाई शिनाख्त

शंकरगढ़। यमुनापार के शंकरगढ़ थाना क्षेत्र में सोमवार को एक युवक का शव पाया गया है। शव पानी से भरे गड्ढे में था, जिसे स्थानीय लोगों ने देखा। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को बाहर निकलवाया। समाचार लिखे जाने तक शव की पहचान नहीं हो पाई थी। यह शव आज पूर्वाह्न 11 बजे शंकरगढ़ केग्राम महैवा से बलई का पुरवा जाने वाली सडक के किनारे स्थित गड्ढे में पाया गया है। गड्ढे में पड़े शव की जानकारी सबसे पहले राहगीरों के जरिए स्थानीय लोगों को हुई। लोगों की सूचना पर मुकामी पुलिस भी मौकेपर पहुंच गई।

शंकरगढ़ थानाध्यक्ष बृजेश सिंह ने बताया कि शव को बाहर निकलवाया गया। उसकी तलाशी ली गई, पर उसके पास से कोई भी सामान या ऐसा कागजात नहीं मिला, जिससे उसकी पहचान हो पाती। एसओ ने बताया कि शरीर पर नीली टी-शर्ट और जींस की काली पैंट मिली है। चेहरा गोल है। युवक फ्रेंच कट दाढ़ी रखे हुए था। फिलहाल शव को अज्ञात में ही चीरघर भेजा जा रहा है।

संगम तट : नेहरू युवा केंद्र ने दीपोत्सव कर निकाली मशाल जुलूस, स्वच्छता का संदेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर इस वर्ष राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, जल शक्ति मन्त्रालय, ह्यगंगा उत्सव 2021ह्ल को नदी उत्सव के रूप में आगामी(1-3 नवंबर) देश भर में गंगा और उसकी सहायक नदियों पर आयोजन कर रहा है। इसी क्रम में नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज , युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशन में 'नमामि गंगे-युवाओं की सहभागिता परियोजना' के अंतर्गत गंगा उत्सव का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में किया जा रहा है। इसके अंतर्गत मशाल यात्रा - मेरी गंगा मेरी शान जिसमे वन्य जीव संस्थान, प्रयागराज की भागीदारी भी रही। मशाल यात्रा को माननीय उपाध्यक्ष, बी ओ जी, नेहरू युवा केंद्र संगठन ने, श्री दिनेश प्रताप सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन संगम स्थित हरिहर गंगा आरती स्थल पर सायं काल में किया गया । जिसमें नेहरू युवा केंद्र से जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे जिला परियोजना अधिकारी एषा सिंह ,लेखाकार अदनान उल्ला खान मौजूद रहे' मशाल यात्रा से जुड़े युवाओं ने हर्षोल्लास के साथ दीप जलाए। दीपोत्सव उपरांत गंगा आरती का आयोजन संगम आरती स्थल के पुजारी द्वारा कराया गया। आरती में नेहरू युवा केंद्र के साथ साथ भारतीय वन्यजीव संस्थान के पी उपाध्याय, वन विभाग, गंगा टास्क फोर्स, गंगा दूत तथा गंगा प्रहरियों ने भी भाग लिया। गंगा में गंदगी न फैलाने तथा दूसरों को भी रोकने हेतु संकल्प लिया गया। इसी कड़ी में श्रृंगवेरपुर में गंगा प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 2 नवंबर को किया जायेगा। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग से रोहित पांडेय जी, नेहरू युवा केंद्र से निर्मल कांत, गुड़िया, गायत्री, कुलदीप, अंकित, रितिका,अमन, महेश द्विवेदी, गुलाब शुक्ला, ग्राम पिपराव, चाका के ग्राम प्रधान तथा सेवानिवृत्त जज, आई आर टी एस भी मौजूद थे।

विधि प्रकोष्ठ यमुनापार ने चार विधानसभा संयोजक, बीस मंडल संयोजक किए घोषित

नैनी। भारतीय जनता पार्टी यमुनापार ने सोमवार को विधि प्रकोष्ठ के तहसील संयोजक एवं मंडल संयोजक की सूची जारी कर दी है। भारतीय जनता पार्टी यमुनापार जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि विधानसभा मेजा से दिनेश द्विवेदी, विधानसभा करछना से अवनीश कुमार मिश्रा, विधानसभा बारा से सलिल द्विवेदी, कोरांव विधानसभा से अनिल मिश्र को विधानसभा संयोजक बनाया गया। वहीं मंडल संयोजक के रूप में मेजा से विजय प्रताप सिंह, उरुवा से अंशुमान त्रिपाठी, सिरसा से राजेश कुमार तिवारी, मांडा से कृष्णमनि गुप्ता,दिघिया से रमेश पांडेय, करछना से हेमराज द्विवेदी, भीरपुर से पवन कुमार द्विवेदी, भडेवरा से कालिका प्रसाद शुक्ल, चाका से ओम आनंद, सोमेश्वर से विपिन कुमार मिश्र, मनकामेश्वर से शशांक शेखर मिश्रा, जसरा से श्यामसुंदर केसरवानी, कौंधियारा से संदीप शुक्ला, शंकरगढ़ से रमेश पांडेय, नारीबारी से ज्ञानेंद्र दत्त चतुर्वेदी, अयोध्या से देवकी नंदन मिश्र, बड़ोखर से पवन सिंह पटेल, कोरांव से विकास शुक्ल, कोहणार से अश्वनी जैन, लेडियारी से राजकुमार कुशवाहा को जिला यमुनापार संयोजक पुरुषोत्तम मौर्य और जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने मनोनयन सूची जारी कर सभी अधिवक्ताओं को शुभकामनाएं दी है। शुभकामनाएं देने वालो मे पुष्पराज सिंह पटेल, राजेश शुक्ला,विजय शंकर शुक्ला, विक्रमादित्य मौर्य, दिलीप कुमार चतुर्वेदी,राम कुमार शर्मा, प्रदीप कुमार मिश्र, धीरेन्द्र मिश्र, अरुण सिंह पप्पू, सुभाष सिंह पटेल आदि ने शुभकामनाएं दी है।

न्यूज झरोखा

आईटीआई नैनी में सतर्कता जागरूकता सप्ताह संपन्न

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र स्थित इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आईटीआई) स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री लौह पुरुष भारत रत्न से सम्मानित सरदार वल्लभ भाई पटेल के 146 वें जयंती वर्ष पर केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा घोषित "स्वतंत्र भारत 75 सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता विषय पर आयोजित एक हफ्ते का आयोजन सफलता पूर्वक मनाया गया। संस्थान के इकाई प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित एक हफ्ते के कार्यकम का प्रारंभ शपथ ग्रहण समारोह, निबंध लेखन, स्लोगन प्रतियोगिता तथा माध्यमिक विद्यालय में छात्रों को कार्यक्रम में भागीदार बनाते हुए दिनांक 1 नवम्बर 2021 को समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए इकाई सतर्कता प्रमुख सुनीता अतुलकर ने सतर्कता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए इसे पूरे वर्ष तक नियमित रूप से अमल लाने पर जोर दिया।

इकाई प्रमुख निखिल कुमार बोकाडे ने प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया तथा संस्थान की प्रगति के लिए सत्यनिष्ठा और आत्मनिर्भरता पर प्रकाश डालते हुए सभी को एक जुट होकर काम करने की आवश्यकता का महत्व बताया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में एचआर प्रमुख ए के सिंह, सहायक सतर्कता प्रबंधक सहित कई अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रयाग संगम सेवा संस्थान ने गरीबों में बांटा खाद्य सामग्री

जसरा। प्रयाग संगम सेवा संस्थान जसरा द्वारा दीपावली के पावन पर्व को देखते हुए संस्थान के पदाधिकारियों ने गरीबों में खाद्य सामग्री वितरण करने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जसरा के अधीक्षक डा० तरुण पाठक द्वारा हर घर दीप जले,हर घर रोशन हो के तहत एक मुहिम चलायी गयी है। जिसके द्वारा क्षेत्र के गरीब और मुशहर बस्ती में सेवा संस्थान द्वारा स्वदेशी वस्तु देकर उनका घर रोशन करने के लिए लोगों को खाद्यान्न वितरित किया। इस कार्यक्रम के तहत मिट्टी का दीपक, रुई बाती, लाई चना नमकीन, सरसों का तेल इत्यादि वस्तुएँ गरीबों को वितरण किया गया। इसी क्रम में सोमवार को विश्वनाथ कालोनी जसरा के काशी विश्वनाथ मंदिर में सबसे पहले पूजा अर्चना करने के बाद गरीबों में सामाग्री वितरण का शुभारंभ किया गया। सीएचसी अधीक्षक डॉ० तरुण पाठक ने संस्था की काफी तारीफ करते हुए कहा कि आप लोग इसी प्रकार सदैव जनहित का कार्य करते रहें। मैं सदैव संस्था के सदस्यों का सहयोग करता रहूँगा। इस मौके पर संस्था के अध्यक्ष सुधांशु मिश्र ने आये हुए लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में जसरा ब्लॉक के एडीओ पंचायत श्याम लाल तिवारी,ग्राम पंचायत अधिकारी जितेंद्र गौड़, रावेन्द्र तिवारी, प्रधान जसरा आशीष सोनकर, शिवेंद्र मिश्र, आलोक पाठक, रावेन्द्र तिवारी चामू, छविनाथ द्विवेदी, पंचम पटेल, सुखशांति शुक्ल,हर्षदीप मिश्र सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

रंगोली प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्राएं हुई पुरस्कृत

करछना। तहसील क्षेत्र के बरांव में स्थित गिरीश कुमारी कन्या इंटर कालेज में सोमवार को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभा मान छात्राओं को विद्यालय की प्रधानाचार्य ने पुरस्कृत किया ।प्रतियोगिता में बनाई गई रंगोली में हाई स्कूल की छात्रा को प्रथम स्थान एवं कक्षा 11' व 12 की छात्राओं को द्वितीय स्थान पर रही छात्राओं को प्रधानाचार्य ज्योति मिश्रा ने उत्कृष्ट छात्राओं को सम्मानित करते हुए पुरस्कृत किया ।इस अवसर पर स्कूल की अध्यापिका अर्चना पाल व अर्चना प्रजापति, मनीशंकर प्रीती सिंह अशोक कुमार गौड सहित स्कूल के छात्र एवं छात्राएँ उपस्थित रहे ।

सेवानिवृत्त उपनिरीक्षक की हुई भावभीनी विदाई

लेडियारी। सेवानिवृत्त उपनिरीक्षक विद्याशंकर मिश्रा कि आज थाना परिसर खीरी में थाना अध्यक्ष राजेश कुमार मौर्या द्वारा बड़े ही अच्छे ढंग से विदाई सम्मान समारोह का आयोजन किया गया ' विदाई सम्मान समारोह के दौरान थानाध्यक्ष द्वारा उप निरीक्षक को श्रीमद्भागवत गीता, छाता, एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया तत्पश्चात उपस्थित लोगों द्वारा अच्छे जीवन की कामना की गई ' उपस्थित लोगों में चर्चा हो रही थी अपने कार्य के दौरान उप निरीक्षक द्वारा लोगों के प्रति बड़े ही ईमानदारी एवं सहजता के साथ कार्य उनको एक अलग छवि प्रदान करता था' मिलनसार एवं मृदुभाषी होने के कारण आम जनमानस में उनकी एक अपनी ही छवि थी जिसे कारण फरियादी सीधे उनसे मिलकर अपनी समस्याओं को बतलाया करते थे' इसी क्रम में थानाध्यक्ष खीरी के नेतृत्व में आज सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के मौके पर थाना परिसर में पुलिसकर्मियों द्वारा शपथ ग्रहण कार्यक्रम रखा गया ' जिसमें पुलिस कर्मियों द्वारा अपने कार्यों के प्रति ईमानदारी एवं सहजता के साथ करने की कसम खाई ' आगे राजेश कुमार मौर्या ने बताया कि आज का दिन भारत के इतिहास में अपना एक अलग अर्थात सर्वोच्च स्थान रखता है। अपना भारतवर्ष आज मजबूती एवं वीरता के साथ खड़ा है उसमें सरदार वल्लभ भाई पटेल जी का अहम योगदान रहा था।

समूह की महिलाओं को एडीओ रामेश्वर सिंह ने किया प्रोत्साहित

करछना। विकास खंड करछना के ग्राम पंचायतों में बडी संख्या में गांवो में गठित स्वम सहायता समूहों की महिलाएं स्वम का रोजगार कर लाभान्वित हो रही हैं। सरकार द्वारा चलाई जा रही है योजना के अंतर्गत स्वम सहायता समूहों से महिलाओं ने बडी संख्या में उत्पाद पैदा कर आत्म निर्भर बन रही है, उक्त बातें विकास खंड करछना के एडीओ आई एस बी रामेश्वर सिंह ने सोमवार को ब्लाक परिसर में टकटैया गांव की गौरी आजीविका स्वम सहायता समूह की संचालिका रविता देवी द्वारा लगाएं गयें मोमबत्ती व अगरबत्ती स्टाल पर समूह की महिला को प्रोत्साहित करते हुए खरीदारी की और लोगों को भी प्रेरित किया ।इस अवसर पर ब्लाक मिशन प्रबन्धक आदित्य तिवारी, संतोष साहू, संजय चौधरी, धर्मेंद्र यादव, गुलाम गौस रविन्द्र कुमार, एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा, अतुल श्रीवास्तव, सहित बडी संख्या में प्रधान व प्रतिनिधि मौजूद रहे ।

दीपावली : एक दिया वीर शहीदों के नाम जलाकर अर्पित करें श्रद्धासुमन : सरदार पतविंदर

अखंड भारत संदेश

ठेले पर मिट्टी के दिया-दियाली संग गली -मोहल्लों में निकले सरदार पतविंदर सिंह

करछना। भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मंडल प्रभारी सरदार पतविंदर सिंह पिछले कई दिनों से विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक मंचो में सहभागिता करते हुए एक दिया सैनिकों के नाम" का उद्घोष मंचों पर एवं लगातार जनमानस के बीच मे विभिन्न सामाजिक क्रियाकलापों के माध्यम से सरदार पतविंदर सिंह ने बोलते हुए कहीं की दीपक की ज्योति हमेशा ऊपर की ओर होती है जिसका तात्पर्य है हमारे सैनिक हमेशा आगे की तरफ बढ़े,तरक्की और सफलता की ओर बढ़ते चले जिससे उन्हें एक नई ऊर्जा शक्ति प्राप्त हो। क्षेत्रीय उपाध्यक्ष,मंडल प्रभारी सरदार पतविंदर सिंह ने आज नैनी क्षेत्र के कई मोहल्लों में प्रातः काल मे ट्राली पर मिट्टी के दीयों संग सड़क पर निकल पड़े आते जाते,मॉर्निंग वॉक करते राहगीरों,घरों के सामने खड़े लोगों को बड़े ही प्रेम-श्रद्धा से दीया देते हुए कहा कि कि एक दिया शहीदों के नाम दीप जलाकर अपनी श्रद्धा उन्हें समर्पित करें देश की रक्षा करते हुए वीर सैनिक शहीद होते हैं उन्हें दीप जलाकर अपनी सच्ची श्रद्धा समर्पित करें जिससे हमारे सैनिकों का मनोबल मजबूत होगा' दीया वितरित करने में शंकर लाल, सोनू निषाद, भानु भारती, अमर सिंह, भोरे प्रजापति, प्रदीप, दीपू, संजय हरमन जी सिंह, दलजीत कौर सहित कई स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

श्री राम मां सीता का हुआ विवाह लगे जयकारे

घूरपुर। घूरपुर क्षेत्र के सेमरा कल्बना गांव में 40 वर्षों से ऐतिहासिक बालमंडल रामलीला का आयोजन किया जा रहा है। सेमरा कल्बना गांव में रविवार को मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम तथा माता सीता का स्वयंवर का मंचन किया गया । जिसमें भगवान श्री राम के बारात की लीला देखने के लिए क्षेत्र के कई गांव से लोग भारी संख्या में उमड़े। और कहा कि ऐसा लग रहा है जैसे हम लोग त्रेता युग में भगवान श्री राम - माता सीता के विवाह में शामिल हुए हैं । जबकि बालमंडल रामलीला कमेटी के संरक्षक प्रेम सिंह ने बताया कि 40 वर्षों से हमारे गांव सेमरा कल्बना में ऐतिहासिक रूप से रामलीला का मंचन किया जाता है । जिसमें भारी संख्या में मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का विवाह देखने के लिए हर वर्ष लोग एकत्रित होते हैं । जबकि रामलीला मंचन के पात्र लगभग गांव के ही लोग होते हैं । जिसमें रामलीला मंचन के समय हर एक पात्र अपने अभिनय में जान फूंकने का काम करता है और पूरे गांव के लोगो के सहयोग से रामलीला का आयोजन किया जाता है । कमेटी के प्रबंधक शिव तथा बबलू और मंत्री कप्तान सिंह पटेल तथा संस्थापक सदस्य अशर्फी लाल गौड़ और बाल मंडल रामलीला कमेटी के पात्र अजय यादव, देवेन्द्र सिंह, कमल गौड़, राजेश पटेल, पवन सिंह, चंचल यादव, कुश सिंह, विनीत यादव आदि रहे।

लौह पुरुष की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जारी।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी,भारत रत्न पूर्व उप प्रधानमंत्री लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता के रूप में मनाते हुए शिवा जी इंटर मीडिएट कालेज में शिक्षकों और छात्रों ने प्रधानाचार्य कैलाश सिंह के नेतृत्व में जागरूकता रैली निकाली रैली में राम बृक्ष राम , धर्मराज , ओमराजन , वीरेंद्र कुशवाहा , राकेश सिंह , विनोद सिंह आदि के साथ सैकड़ो की संख्या में छात्रों ने सरदार बल्लभ भाई पटेल के चित्र पर माल्यार्पण कर रैली निकाली । इसी कड़ी में नारीबारी स्थित रामकृष्ण गुरूकुलम विद्यालय में विद्यालय के संचालक सूर्यकांत शुक्ला ने नेतृत्व में लौह पुरुष की जयंती को मनाया औ? हर साल की तरह इस साल भी साधन सहकारी समिति सुरवल साहनी परिसर में सरदार पटेल सभागार में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया , कार्यक्रम की अद्द्यक्षयता राधेश्याम सिंह ने किया तथा संचालन विजय शंकर शुक्ल ने किया उक्त अवसर पर मंडल अद्द्यक्ष अंजनी लाल , शिवमोहन सिं , अभिषेक सिंह , इन्द्रबहादुर , शैलेन्द्र सिंह सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे ।

सरदार पटेल एवं इंदिरा गांधी को पुष्पांजलि करते हुए किया नमन

सहसों। कांग्रेस कार्यकताओं ने बाबू गंज बाजार में पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद की अध्यक्षता में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि करके जयन्ती को धूमधाम से मनाया। एवं देश की एकता अखंडता के लिए खुद को बलिदान कर देने वाली भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बैठक में कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एडवोकेट देवराज उपाध्याय, गिरधारी लाल सरोज, शमशेर बहादुर पटेल, सलीम टाइगर, तहजीब उल हसन, मोहम्मद यूसुफ, धर्मचन्द, मोहम्मद आफताब, बबलू प्रधान, रंजीत यादव, इश्तियाक अहमद, अकबर अहमद, राम सूरत पाल, राम सिंह पाल, राहुल पाल एवं मनोज कुमार उपाध्याय उपस्थित थे। इसी क्रम में क्षेत्र के भरद्वाज गुरुकुलम रुदापुर में भी लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी की शहादत दिवस उनके चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि करते हुए उनको नमन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष संस्थान के प्रबंधक विनय उपाध्याय ने कहा कि सरदार पटेल जी एक महान व्यक्तित्व के परम देशभक्त थे एवं देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के देश के प्रति बलिदान को सराहा। इस अवसर पर संस्थान के शिक्षक एवं छात्र छात्राओं ने दोनों नेताओं के बारे में चर्चा परिचर्चा कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। यहां प्रमुख रूप से विपुल शुक्ला, अंजली यादव, साक्षी श्रीवास्तव, दिनेश सिंह, कुमारी फातिमा, गौरव श्रीवास्तव, अश्विनी कुमार श्रीवास्तव आदि रहे।

भाजपा युवा मोर्चा मंडल शंकरगढ़ की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा की कार्यसमिति व युवा संवाद कार्यक्रम की बैठक का आयोजन केशवराज वाटिका शिवराजपुर में किया गया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला मंत्री एवं मंडल मीडिया प्रभारी महेंद्र प्रताप सिंह व विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख शंकरगढ़ निर्मला देवी रही।अतिथियों द्वारा सर्वप्रथम पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की तस्वीर पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि ने मंडल के पदाधिकारियों को पार्टी द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। भारतीय जनता पार्टी के जिला संयोजक संजीव मिश्रा ने सदस्यता अभियान का शुभारम्भ कर अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम का संचालन राकेश विश्वकर्मा जिला आईटी सह संयोजक के द्वारा किया गया। युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष संदीप सिंह ने कार्यक्रम में आए हुए सभी लोगों का माल्यार्पण कर अंगवस्त्रम भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने लोगों के बीच जाकर भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा और उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों को लोगों तक पहुंचाने का आश्वासन दिया। अध्यक्षता कर रहे संदीप सिंह ने सरकार के द्वारा कराएं जा रहे कार्यो का एवं आगामी योजनाओं की जानकारी दी। इस मौके पर रंगीले मिश्रा, अशोक कुमार त्रिपाठी, युवा मोर्चा के पदाधिकारी महामंत्री आशीष शुक्ला, उपाध्याय भास्कर त्रिपाठी, पिन्टू सिंह, विशाल केसरवानी, मंत्री ज्ञानबाबू, राहुल सिंह, उमेश कुमार, कार्यालय प्रभारी किंगराज, मीडिया प्रभारी लवकुश केसरवानी, सो मी प्रभारी सुनील कुमार मौर्या, कार्य समिति सदस्य सत्यम गिहार, अनुराग त्रिपाठी, शीला देवी, शक्ति केन्द्र संयोजक, बूथ अध्यक्ष सहित सैकड़ो की संख्या में युवा मोर्चा के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

क्षेत्र के कई राष्ट्रीय खिलाड़ियों को किया गया सम्मानित

अखण्ड भारत संदेश

खेल गोष्ठी एवं खिलाड़ी सम्मान समारोह संपन्न.

सिरसा। प्रयागराज मेजा विधानसभा क्षेत्र के समहन गांव के प्राथमिक विद्यालय टिकुरी के वालीबाल खेल के मैदान पर ₹ खेल संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह ₹ तथा एक दिवसीय वॉलीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 8 टीमों ने हिस्सा लेकर अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच आदर्श क्लब अरई व स्पोर्ट्स क्लब समहन के बीच खेला गया। जिसमें अरई ने समहन को 25-18 व 25-22 अंकों से हराकर प्रतियोगिता जीत ली। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश समाजवादी पार्टी स्पोर्ट्स विंग के प्रदेश प्रभारी व पूर्व राष्ट्रीय वॉलीबाल खिलाड़ी हसनउद्दीन सिद्दीकी रहें। मुख्य अतिथि के मेजा विधानसभा में प्रथम आगमन पर डिस्ट्रिक्ट वॉलीबाल एसोसिएशन, प्रयागराज के महासचिव आरपी शुक्ला ने बुके प्रदान कर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम के आयोजक व जिला वॉलीबाल संघ के संरक्षक डॉ.देवी सिंह पटेल ने मुख्य अतिथि को अंग वस्त्र,प्रतीक चिन्ह व सरदार पटेल की प्रतिमा भेंट कर उनका स्वागत व अभिन्नदन किया। मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश समाजवादी पार्टी स्पोर्ट्स विंग के प्रदेश प्रभारी व पूर्व राष्ट्रीय वॉलीबाल खिलाड़ी हसनउद्दीन सिद्दीकी ने जिला वॉलीबाल संघ प्रयागराज के नव निर्वाचित पदा धिकारियों के साथ-साथ जनपद व क्षेत्र के कई राष्ट्रीय खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया। उन्होंने कहा की इसका उद्देश्य खिलाड़ियों की आवाज उठाना है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार खिलाड़ियों की चयन प्रक्रिया मे अपारदर्शिता, पक्षपात एवं प्रतिभा खोज की खामियां हैं और खिलाड़ियों पर मानसिक दबाव व मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन की कमी, खिलाड़ियों के समुचित शारीरिक विश्राम की कमी,खिलाड़ियों व कोच के मानदेय में भेदभाव सहित तमाम खामियां गिनाते हुए बताया कि 1994 में सपा की सरकार मे मुलायम सिंह यादव ने यश भारती पुरस्कार योजना की शुरूआत की थी और इस पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये थी। सन 2006 मे बसपा सरकार में इन पुरस्कारों को बंद कर दिया गया। फिर सपा सरकार आने पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पहल पर ये पुरस्कार शुरू किया गया और पुरस्कार की राशि बढ़ाकर 11 लाख रुपये कर दी गई। वहीं पुरस्कार पाने वाले व्यक्ति को आजीवन 50 हजार रुपये पेंशन दिए जाने का भी प्रावधान किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा जिला वॉलीबाल संघ के अध्यक्ष प्रभात राय, महासचिव आरपीशुक्ला, उपाध्यक्ष बीएचजैदी, संयुक्त मंत्री सीपी मिश्रा, पंकज शुक्ला, संगठन मंत्री प्रमोद राय, सदस्य प्रभाकर चौबे, मुकेश शुक्ला तथा जिला खो-खो संघ, प्रयागराज के सचिव जेपी शर्मा, जिला कबड्डी संघ प्रयागराज के सचिव पीके पांडेय, पूर्व खिलाड़ी कौशलेश शर्मा, महमूद आलम, जावेद अख्तर, आनंद शर्मा, चंद्रभान राय, विवेक शुक्ला आदि खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। आयोजन समिति की ओर से बागीश द्विवेदी व अनुराग पटेल आदि ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद राय ने किया। अंत मे जिला वॉलीबाल संघ के महासचिव आर पी शुक्ला ने पधारें हुए सभी अतिथियों खिलाड़ियों दर्शकों व आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अल्हवा ग्राम पंचायत की तस्वीर बदलनी है : शहजादे

मोहम्मद गौस

कई विकास योजनाओं पर काम चालू,दीपावली से सचिवालय भवन पर काम काज होगा शुरू

कोरांव। काफी समय से विकास योजनाओं से दूर ग्राम पंचायत अल्हवा की तश्वीर बदलती दिख रही है। नव निर्वाचित ग्राम प्रधान अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने शपथ लेने के बाद उसी दिन से विकास कार्यों की रफ्तार बढ़ा दी थी, जिस कारण पांच माह में ही प्रधान ने कई विकास योजनाओं को गांव में संचालित करा दिया। उल्लेखनीय है कि प्रधान शहजादे ने सर्व प्रथम गांवों के जितने भी मार्ग अतिक्रमित हैं उन्हें खाली करा कर उस पर सड़कें बनवाने का काम शुरू कर दिया। जिससे आवागमन में लोगों को सुविधाएं होने लगी हैं। आधा दर्जन से अधिक मार्गों का निर्माण कार्य हो चुका है सेस मार्गों पर कार्य शुरू है। और मार्गों के निर्माण कार्य अनुमोदन में फाइलें लगी हैं। श्री शहजादे ने बताया कि मेरा सपना है अल्हवा ग्राम को विकास की मुख्य धारा में शामिल करना। उन्होंने बताया कि ग्राम में बड़ी योजनाओं में सचिवालय भवन का निर्माण कार्य,जीर्णोद्धार,सुसज्जित युक्त,अस्पताल,मनरेगा पार्क,बैकुंठ धाम का निर्माण चेकडैम,बंधे,पुरानी नस्ट हो चुकी सड़कों को मरम्मती करण करके उन्हे इंटर लॉकिंग निर्माण कार्यों से सुसज्जित किया जाए। जिस पर कार्य जल्द शुरू हो जाएगा। गांव में मार्गों के किनारे कोलान बस्ती की जल निकासी को ध्यान में रखते हुए सात सौ मीटर पक्की नाली का निर्माण कार्य और दो किलो मीटर की सड़क तथा पांच स्वीकृत मार्गों को निर्माण कार्य धान की फसल कटते ही चालू करा दिया जायेगा। प्रधान के अनुसार बैकुंठ धाम और मनरेगा पार्क का शिलान्यास जिला पंचायत अध्यक्ष प्रयाग राज डाक्टर वी के सिंह द्वारा २९ अक्तूबर को किया गया है जिस पर निर्माण कार्य प्रारंभ करा दिया गया है। गांवों के लघु सीमांत पात्र किसानों की एवम सार्वजनिक भूखंडों पर समतली करण का कार्य युद्ध स्तर पर जारी है। जिससे श्रमिकों के सामने भूंखमरी की समस्या न रहे। और किसानों का कल्याण हो,विकास हो। वाटर लेबिल समुचित रूप से जो इसके लिए नदी नाला भैंसहवा में एक चेक डैम निर्मित करवाने का कार्य शुरू होने जा रहा है। ग्राम पंचायत में दलित आदिवासियों भूमिहीनों को कृषि एवं आवासीय आवंटन की कार्यवाही शुरू की जा रही है। जिससे गरीब सार्वजनिक सरकारी जमीनों के बजाय आवंटित जमीनों पर अपने आशियाने बना सकें। और विकास की मुख्य धारा में शामिल हों जाएं। इसके लिए प्रधान ने सासन स्तर पर भू माफियाओं से जमीनें खाली कराने के लिए पत्राचार किया गया जिस पर ऐसी सार्वजनिक जमीनें खाली कराने के लिए राजस्व और पुलिस बल की टीम गठित हो गई हैं। कुछ जमीनें खाली कराई जा रही हैं। ग्राम प्रधान ने बताया कि गांव में जितनी भी चक्रोड,सेक्टर,हैं सब पर मिट्टी और इंटर लॉकिंग

ग्राम पंचायत के समग्र विकास हेतु मेरे ग्राम प्रधान जी तेजी से लगे हैं। ऐसे व्यक्तित्व के साथ कार्य करने में कोई परेशानी नहीं नजर आती। विकास की रफ्तार गांव में बढ़ती जा रही है।

अभिसेक कुमार
ग्राम पंचायत अधिकारी
कोराव प्रयागराज

ग्राम पंचायत के समग्र विकास में लगा हूं। कई योजनाएं गांव में ला कर कार्य कराया जा रहा है। कई समस्याओं को मुख्य मंत्री जी तक प्रस्तुत किया हूं। आशा है अनुमोदन मिलते ही और भी बड़े कार्य शुरू होंगें। मेरा प्रयास होगा की सर्व धर्म समभाव के आधार पर कार्य करता रहूं। कोई गांव में कुपोषण और भूँख भय से न मरे इस पर कार्य कर रहा हूं। गरीबों को कंबल मजलूम विधवा विकलांगों महिलाओं को अंगवस्त्र की व्यवस्था करूगा। जिससे उन्हें कष्ट न हो।,,

अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे
ग्राम प्रधान अल्हवा कोराव,प्रयागराज

का कार्य करा कर चहुंओर आवागमन सुविधाएं बहाल की जायेंगें। सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर ब्याप्त भ्रष्ट्राचार के बारे में प्रधान ने बताया कि कोटेदार की मनमानी से जनता त्रस्त है। इसमें तहसील और आपूर्ति विभाग के अधिकारी स्वार्थ वस कार्यवाही नहीं करते। जिस कारण उच्च स्तरीय शिकायत सासन स्तर पर की है। जांच भी हो गई है। कोटेदार के खिलाफ चार्ज शीट भी जारी हो गई है। जल्द ही कोटेदार के खिलाफ कार्यवाही कर नए कोटेदार का चयन किया जाएगा। इस निमित्त ग्राम सभा की खुली बैठक में नए कोटेदार के चयन हेतु प्रस्ताव भी पारित हो चुका है।

खबर संक्षेप

गरीब असहाय दिव्यांग जन कम्मल वितरण चनैनी में आज

करछना। विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत चनैनी गांव में मंगलवार को गरीबों को कम्मल वितरण का आयोजन किया गया है । गांव के प्रधान व महा मंत्री प्रधान संघ धीतेश तिवारी ने बताया कि मंगलवार को गांव के गरीब असहाय दिव्यांगजनो को ठंड से बचने के लिए कम्मल वितरण किया जायेगा ।उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अभिषेक तिवारी अधिवक्ता हाई कोर्ट के कर कमलों द्वारा वितरण किया जायेगा, जिसमें विशिष्ट अतिथि टीका राम वर्मा प्रभारी निरीक्षक करछना, संजीव चौबे प्रभारी औद्योगिक थाना क्षेत्र ,आशीष चौबे चौकी इंचार्ज जेवनिया थाना मेजा होंगे जिसका संचालन आशीष शुक्ला करेंगे। प्रधान धीतेश तिवारी ने अपील की है कि कार्यक्रम को सफल बनाने में सहभागिता करें ।

12 नवंबर तक जमा होगा बैक परीक्षा फार्म

जंघई। नागरिक पीजी कालेज जंघई में श्रेणी सुधार, बैक पेपर परीक्षा हेतु फार्म आनलाइन हो रहा है ।जिन छात्र छात्राओं को यह परीक्षा देनी हो आनलाइन करके महाविद्यालय में 12 नवंबर तक जमा करें ।यह जानकारी देते हुए प्राचार्य डाक्टर राजीव मालवीय एवं कार्यालय अधीक्षक करुणेश त्रिपाठी ने बताया है कि जिन छात्र छात्राओं का नंबर कम है या फेल हो गये हैं वह लोग श्रेणी सुधार एवं बैक परीक्षा हेतु फार्म आनलाईन करके जितेन्द्र तिवारी लिपिक पीजी विभाग के पास जमा करें।

प्रवेश 18 नवंबर तक

जंघई। एनसीवीटी एवं राज्य सरकार द्वारा आईटीआई में प्रवेश की तिथि बढ़ाकर 18 नवंबर तक कर दी गई है।यह जानकारी देते हुए प्रबंधक सतीश पांडेय ने बताया है कि छात्र प्रवेश लेकर अध्ययन करें और हमारे यहाँ प्लेसमेंट भी कराया जाता है।आईटीआई करने के उपरान्त तत्काल विभिन्न लिमिटेड कंपनियों में नौकरी भी दिलवाई जाती है।

जिलाधिकारी ने डिस्ट्रिक कांटेक्ट सेंटर का किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

आपदा नियंत्रण कक्ष का किया निरीक्षण

डिस्ट्रिक्ट कान्टेक्ट सेंटर का शुभारम्भ करते जिलाधिकारी।

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने सोमवार को कलेक्ट्रेट स्थित संगम सभागार के ऊपर बनाये गये डिस्ट्रिक्ट कान्टेक्ट सेंटर का शुभारम्भ किया। विधानसभा निर्वाचक नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण-2022 एवं विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 के लिए दूरभाष नं0 0532-2644024 टोल फ्री नम्बर 1950 का फीता काटकर शुभारम्भ किया। उप निर्वाचन अधिकारी/ ए0डी0एम0 प्रशासन एवं सहायक निर्वाचन अधिकारी के0के0 वाजपेयी को निर्देशित किया कि निर्वाचन से सम्बंधित सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करा ली जाये। तत्पश्चात उन्होंने आपदा नियंत्रण कक्ष का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने चल रही वैक्सीनेशन की जानकारी नियंत्रण कक्ष प्रभारी से ली तथा कहां-कहां सम्पर्क किया, उसका विवरण लिया। उन्होंने प्रभारी नियंत्रण कक्ष को निर्देशित किया कि प्रत्येक दो घण्टे में चल रही वैक्सीनेशन की जानकारी लेते रहे तथा अवगत कराते रहे।

हमेशा प्रासंगिक रहेंगे लौह पुरुष सरदार पटेल : आस्था सिंह पटेल

मेजा। विकासखंड उरूवा अंतर्गत सोनाई में स्थापित लौह पुरुष सरदार पटेल की प्रतिमा के पास आरती पटेल प्रबंधक रूचिका सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र व गीता गुप्ता विधानसभा अध्यक्ष समाजवादी पार्टी मेजा के द्वारा आयोजन कर लौह पुरुष सरदार पटेल की जयंती मनाई गई। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती आस्था सिंह पटेल वरिष्ठ नेत्री समाजवादी पार्टी चावल कौशांबी रही। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि के रूप में डॉ देवी सिंह पटेल प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ रहे। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता रामरती भारती प्रधान मोनाई ने किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राममिलन भारती पूर्व सैनिकए अजय बिंद प्रधान नेवढ़ियाए दिलीप विश्वकर्मा जिला सचिव समाजवादी पार्टी मेंजाए मंगला पाल प्रधान नरवर चौकठाए प्रदीप यादव ,गुड्डू यादवद्ध प्रधान नीबीए समर बहादुर बिंद प्रधान खुरमा उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक इंद्रेश यादवए तहसीलदार पटेलए विजय शंकर पटेलए मंगला गुप्ताए लवलेश पटेलए तारकेश्वर बिंदए राजेंद्र यादवए रामपाल सिंहए सोमनाथ यादवए चंद्रदेव यादवए राजू मौर्याए शिवमनि प्रजापतिए दयाराम पालए राम प्रसाद बिंद एवं सुरेंद्र कुमार बिंद मौजूद रहे। कार्यक्रम के शुभारंभ के पहले मुख्य अतिथि व प्रमुख अतिथि द्वारा सरदार पटेल के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत जिसके बाद मुख्य अतिथि में अपने संबोधन में कहा कि लौह पुरुष सरदार पटेल हमेशा प्रासंगिक रहेंगे।अपने कथनी और करनी में अंतर ना रखने वाले देश के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल ने 560 रियासतों को संघीय रूप दिया। कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारियों व कार्यकताओं ने इस महापुरुष के चित्र पर माल्यार्पण कर उनकी यादगार को तरोताजा किया इस दौरान गौतम पटेल विनोद सिंह विश्वनाथ यादव शिवा पटेल कलेक्टर बिंद बिंद सुनील वर्मा लक्ष्मी शंकर पाल राम राज पटेल राकेश यादव रुद्र प्रदीप पटेल अरविंद पटेल अर्जुन थापाए दीपक पटेलए विजय पटेल सहित कई समाजवादी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

फाफामऊ में सपा प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम का कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत

प्रयागराज। फाफामऊ बाईपास पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल का कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। बबलू यादव के नेतृत्व में काफी संख्या में सपा कार्यकर्ता बाईपास पर पहले से ही मौजूद रहे। जैसे ही सपा प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल को फाफामऊ बाई पास पहुंचते ही कार्यकर्ता गगनभेदी नारे लगाने लगे। इसके पश्चात फूल मालाओं से लाद दिये। स्वागत करने वालों में डॉ आर के वर्मा विधायक, नरेन्द्र यादव बबलूयादव , विनोद वर्मा मोनू सचिन पटेल राजेश पाल, गप्पू कश्यप मुस्सन यादव मुलायम यादव रतन यादव गोलू पटेल सनी पटेल शोभनाथ यादव दिलीप यादव रिंकू यादव सहित काफी संख्या में लोग शामिल रहे।

जन कल्याण के लिए महिलाओं ने निकाली कलश शोभायात्रा

करछना। क्षेत्र के कुंजल वैश्य का पूरा गांव में जन कल्याण संगीतमयी हेतु सात दिवसीय श्रीमद्भागवत ज्ञान कथा वैदिक मंत्रोचार के साथ घटस्थापन व वेदी पूजन के साथ शुरू हुआ। कथा के प्रथम दिन सोमवार को गाजे-बाजे के साथ भव्य कलश व शोभा यात्रा भी निकाली गई । जिसमें श्रद्धालु भक्त लोग काफी संख्या में कलश यात्रा में शामिल रहे। महिलाएं सिर पर कलश रखकर मांगलिक गीतों के साथ गांव के चतुर्दिक परिक्रमा करती हुई यात्रा मंडप पहुंची। कथा वाचक के रूप में कथा के व्यासपीठ पर विराजमान श्री धाम वृंदावन से पधारे पंडित शैलेंद्र जी महाराज ने लोगों को उपदेशित करते हुए बताया कि जो नर नारी भक्त लोग कलश यात्रा में शिरकत करते हैं । उन्हें कई तीर्थों का पुण्य फल प्राप्त होता है। उन्होंने लोगों से कथा श्रवण के लिए विशेष बल देते हुए बताया कि कथा सुनने से मानव की सारी व्यथा दूर हो जाती है। मुख्यश्रोता यजमान जनार्दन प्रसाद शुक्ला एडवोकेट पत्नी सुशीला देवी ने कथा व्यास सहित सभी आचार्य जनों का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। कथा के संयोजक भाजपा नेता पं राजेश शुक्ला ने कलश यात्रा में शिरकत किए सभी भक्त जनों के प्रति आभार जताया। इस मौके पर पूज्य कुलगुरू पंडित शिव शंकर मिश्र दिवाकर शुक्ला ब्रह्मनंद शुक्ला कृष्णानंद शुक्ला सहित आदि भक्त लोग मौजूद रहे।

सपा लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव बने अंशु

मेजा रोड। मेजा विधानसभा क्षेत्र के सपा नेता अभिषेक सिंह अंशु को समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी का राष्ट्रीय सचिव बनाया गया। जिससे क्षेत्रीय सपाइयों मे खुशी का माहौल है। बता दें कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर पदाधिकारियों के गठन के क्रम मे मेजा विधानसभा क्षेत्र के मेजारोड निवासी अभिषेक सिंह अंशु को समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी का राष्ट्रीय सचिव बनाया गया। राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी पाकर अंशु ने कहा कि समाजवादी पार्टी की नीतियों को जन जन तक पहुंचाते हुए संगठन को और अधिक बल एवं गतिशीलता प्रदान करेंगे। जिससे कि 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बने। अंशु सिंह को राष्ट्रीय सचिव बनाए जाने पर क्षेत्रीय सपाइयों मे खुशी है। सपा पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई दी है।

श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन सुदामा प्रसंग व परीक्षित मोक्ष की कथा सुनाई

धनुपुर। राजराजेश्वरी महाशक्ति पीठ चक्रसुदर्शनपुरी धनूपुर प्रयागराज में चल रही श्रीमद्भागवत कथा का सोमवार को समापन हो गया। कथा के अंतिम दिन भी श्रीमद् भागवत का रसपान पाने के लिए भक्तों का सैलाब कथा स्थल पर उमड़ पड़ा। कथावाचक स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज ने श्रीमद् भागवत कथा का समापन करते हुए कई कथाओं का भक्तों को श्रवण कराया जिसमें प्रभु कृष्ण के 16 हजार शादियां के प्रसंग के साथ, सुदामा प्रसंग और परीक्षित मोक्ष की कथायें सुनाई। इन कथाओं को सुनकर सभी भक्त भाव विभोर हो गए। कथा समापन के दौरान भक्तों को भागवत को अपने जीवन में उतारने की बात कही जिससे सभी लोग धर्म की ओर अग्रसर हो। कथा के अंतिम दिन सुदामा चरित्र के माध्यम से भक्तों के सामने दोस्ती की मिसाल पेश की और समाज में समानता का संदेश दिया। साथ ही भक्तो को बताया कि श्रीमद् भागवत कथा का सात दिनों तक श्रवण करने से जीव का उद्धार हो जाता है तो वहीं इसे कराने वाले भी पुण्य के भागी होते है।सहस्त्रचंडी महायज्ञ एवं भागवत कथा के आयोजक रामानुजाचार्य हरिप्रपपन्नाचार्य महाराज ने सभी आगंतुक को आशीर्वचन देते हुए आभार प्रकट किया।इस अवसर पर आचार्य अशोक कुमार शुक्ल, आचार्य आद्या प्रसाद तिवारी, उपाचार्य मदन गोपाल मिश्रा, आचार्य अंबुज द्विवेदी, ईश्वरचंद्र शुक्ल, आशाराम शुक्ल, मानस भास्कर अनुज महाराज, जवाहरलाल गौड़, चंद्रकांत पांडेय, शेखर तिवारी, सुनील तिवारी, धर्मेंद्र पांडेय, वेद तिवारी, मनीष पांडेय, विवेक शुक्ल, अभिषेक शुक्ल, हर्षवर्धन शुक्ल, उत्कर्ष शुक्ल, चंद्रबली पांडेय, सुरेन्द्र पांडेय, इंद्रबली शुक्ला, हरिश्चन्द्र विश्वकर्मा, आशाराम गौड़ आदि रहे।

सपा के संभावित प्रत्याशी ने किया बारा क्षेत्र का दौरा

भ्रमण के दौरान क्षेत्र के सपाईयों से मिले अजय मुन्ना

जसरा। नारायण पाली क्लीनिक का उद्घाटन समारोह बारी बजाहिया में मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के बारा विधानसभा के संभावित प्रत्याशी अजय भारती मुन्ना भैया ने कहा कि बारा विधानसभा क्षेत्र एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र है खासतौर कौंधियारा ब्लाक से 35 किलोमीटर दूर लोगों को जाना पड़ता है इलाज के लिए जैसे नजदीक में भनौरी चौराहे पर हॉस्पिटल का जो शुभारंभ हुआ है वह बहुत ही सराहनीय है इसी के साथ बारा विधानसभा क्षेत्र के कई गांव में जिसमे बारी बजहिया, बकराव, बैरी बसहारा, व बारा क्षेत्र के कई लोगों के यहां पहुंचे जिनका अभी हाल ही में देहांत हुआ है शोक संवेदना व्यक्त कर लोगों से मुलाकात किया उसके बाद ग्राम सभा भोड़ी में स्थित पंचमद्वा धाम मंदिर का विद्युतीकरण अजय मुन्ना के द्वारा कराया गया था उस मंदिर पर जाकर देवाधिदेव महादेव का आशीर्वाद लिया तथा वहां पर मौजूद दर्जनों लोगों से मुलाकात कर समाजवादी पार्टी की पूर्व सरकार के विकास कार्यों को गिना कर पुनः समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने की अपील की इसी कार्यक्रम के दौरान पूर्व विधायक बारा रामसेवक पटेल अपने समर्थकों के मौजूद रहे। साथ में मौजूद रहे समाजवादी पार्टी के विधानसभा अध्यक्ष भागीरथी बिंद, उपाध्यक्ष सुधीर सिंह, उपाध्यक्ष बबलू मिश्रा, उपाध्यक्ष दुर्गा कुशवाहा, कोषाध्यक्ष मानसिंह, बुधराज यादव, महासचिव अर्जुन सिंह पटेल, सेक्टर प्रभारी राम रसायन सिंह, उमा शंकर पांडे उर्फ मुन्ना पांडेय, पूर्व प्रधान विक्रमा सिंह, मुन्ना सिंह, देव मुनि पाल, झल्ले पांडेय, अनिल कुमार कोरी, पिंटू भारतीय, संदीप रैदास, साजन दुबे, मान बहादुर सिंह, रमेश पाल ,शिव शंकर यादव, भोला यादव, दिनेश भारतीय सहित दर्जनों लोग मौजूद रहें।

धनतेरस को ही धैर्य लोक कहते हैं : स्वामी श्री योगी सत्यम

अखंड भारत संदेश

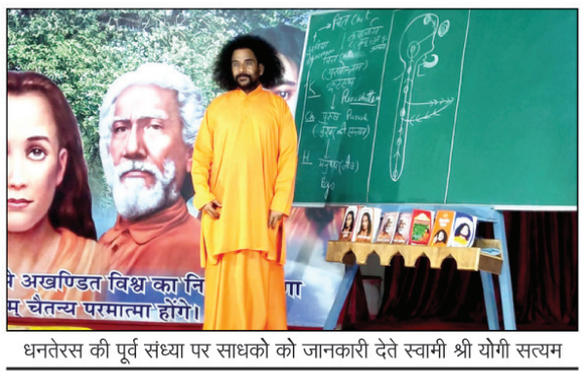

धनतेरस की पूर्व संध्या पर साधको को जानकारी देते स्वामी श्री योगी सत्यम

प्रयागराज। झूसी स्थित क्रियायोग अनुसंधान संस्थान में अंतरराष्ट्रीय क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम ने सोमवार को साधकों को धनतेरस की पूर्व संध्या पर बताया कि धनतेरस को ही धैर्य लोक कहते हैं ' तथा यह भी बताया कि हम लोग निधन शब्द से परिचित हैं, निधन का अभिप्राय है अंदर का धन जिसे जीवन तत्व कहते हैं ' जब वह अदृश्य हो जाती है तो उसकी क्रियाशीलता शून्य हो जाती है, तो आम भाषा में कहते हैं निधन हो गया ' जो अंतःकरण का धन है, यह 14 स्वरूपों में प्रकट होता है, एक - एक स्वरूप एक- एक लोक को प्रकट करता है ' एक एक भुवन को प्रकट करता है जिसे 14 भुवन कहते हैं 13 वे भुवन को अनंत धैर्य लोग कहते हैं ' जब हम अनंत धैर्य लोग की शक्ति को पा जाते हैं तो यह समझना चाहिए हम धनतेरस अवस्था को प्राप्त हो गए हैं ' धनतेरस अवस्था के बाद एक अच्छी अवस्था आती है जिसमें हम अपने अंतः करण को उस धन से मिल जाते हैं, जिसे मिलने के बाद अनुभव होता है कि हमारे परमात्मा के बीच दूरी शून्य है ' इस अनुभूति में जब हम आ जाते हैं तो पता चलता है कि हम 14 वे भुवन में आ गए हैं , जिसे सत्य लोक कहते हैं, धनतेरस को धैर्य लोग कहते हैं ' भारतीय संस्कृत में अ अंतः धैर्य में प्रवेश कर इसी से आच्छादित हो करके समस्त कार्यों के संपादन के लिए प्रयत्न करना पड़ता है ' जब स्पष्ट हो जाता है कि धनतेरस किसे कहते हैं तो अपने अंदर अनंत धैर्य प्रकट हो जाता है तो हमें धन के 13 वे विशाल स्वरूप की अनुभूति होती है किसे धैर्य लोग कहते हैं इसी को धनतेरस भी कहते हैं।

मेजा प्रमुख ने क्षेत्र पंचायत सदस्यों को किया सम्मानित, दीपावली का दिया तोहफा

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि क्षेत्र पंचायत सदस्य गांवों के विकास में पात्रों तक पहुंचाएं जन-कल्याणकारी योजनाएं

दीपावली का उपहार देते मेजा प्रमुख

मेजा। मेजा ब्लाक परिसर में सोमवार को क्षेत्र पंचायत सदस्यों के विकास एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।जहां क्षेत्र पंचायत सदस्यों को दीपावली के अवसर पर प्रमुख गायत्री मिश्रा ने कंबल,शाल व पानी की टंकी देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि विकास के नाम पर जनता ने आप सभी को अपना जनप्रतिनिधि चुना है। केंद्र व प्रदेश सरकार गांवों के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। सरकार की मंशा पर खरा उतरते हुए आप लोग निष्ठा से कार्य करें। प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्र ने कहा कि गांवों के विकास में क्षेत्र पंचायत सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आप सभी ईमानदारी से कार्य करते हुए अपने -अपने गांव को विकास की मुख्य धारा में शामिल कराने के लिए विभिन्न योजनाओं के बारे में लोगो को जानकारी दें।कार्यक्रम में सभी वक्ताओं ने क्षेत्र पंचायत सदस्यों को केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं को लोगो तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। वहीं प्रमुख की कार्यशैली की सराहना की।कार्यक्रम का संचालन प्रधान संघ जिला प्रभारी अनिल शुक्ला ने किया। इस मौके पर प्रमुख रूप से ई. नित्यानंद उपाध्याय, पूर्व ब्लाक प्रमुख मुन्नन शुक्ला, नमामि गंगे के जिला संयोजक अमरेश तिवारी, प्रधान काजी मुअज्जम, जिला पंचायत सदस्य देशराज सिंह, बाबुआन द्विवेदी, कमला प्रसाद पटेल, विनय मिश्र, विनीत मिश्र, विवेक मिश्र, संजय तिवारी, राहुल मिश्र, राहुल मिश्र, सहायक विकास अधिकारी(को)विष्णु प्रभाकर मिश्र सहित ब्लाक के समस्त कर्मचारी मौजूद रहे।

रजस्वला ने दिया नारी सशक्तिकरण का संदेश

प्रयागराज। प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे मिशन शक्ति 3.0 के अंतर्गत आज पूर्वाह्न डीआईओएस और नुक्कड़ नाट्य अभिनय संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में नाटक ह्यरजस्वलाह्न का भावपूर्ण मंचन किया गया। राजकीय बालिका इंटर कालेज में मंचित नाटक ने नारी सशक्तिकरण का संदेश भी दिया। दामिनी यादव द्वारा लिखित और कृष्ण कुमार मौर्य द्वारा निर्देशित इस नाट्य प्रस्तुति में महावारी के दौरान गुजरती एक महिला की कहानी का सजीव मंचन किया गया। उसके साथ कार्यस्थल पर, अपने घर पर और इस समाज में किस तरह उसके साथ बर्ताव किया जाता है, उसी का यथार्थ चित्रण है नाटक रजस्वला।नाट्य प्रस्तुति की प्रमुख भूमिका में कुमुद कनौजिया ने अपने सशक्त अभिनय से दर्शकों से कई सवाल पूछे। नाटक का एक संवाद, जिस पर दर्शकों ने खड़े होकर कलाकारों का अभिवादन किया, वह यह था की ह्ययह जो मैं सेनेटरी नैपकिन इन नालियों में बहाती हूं, इसी मांस के लोथड़े से कभी वक्त आने पर तुम्हारे वजूद को बनाती हूं।ह्नइसलिए मुझ पर न हंसो, मैं इस दर्द से छटपटाती हूं, क्योंकि इसी महावारी की बदौलत मैं तुम्हें ढूंढ से इंसान बनाती हूं। मुख्य अतिथि अनामिका चौधरी ने निर्देशक कृष्ण कुमार मौर्य को बधाई दी और कहा ऐसे विषयों को लेकर आप काम कर रहे हैं, जिस पर लोग बात करने से कतराते है। ऐसे विषय पर काम करना वास्तव में सराहनीय है। जिला विद्यालय निरीक्षक आरएन विश्वकर्मा ने कलाकारों का उत्साहवर्धन किया और कहा कि ऐसे कार्यक्रम प्रत्येक विद्यालय में कराए जाएंगे, ताकि सभी बच्चियों को जागरूक किया जा सके। कार्यक्रम के अंत में इस नाटक के बाद कलाकारों ने किसी तरह का आर्थिक सहयोग नहीं मांगा, बल्कि सिर्फ एक सेनेटरी पैड मांगा। यह सेनेटरी पैड शुरूआत संस्था द्वारा बनाए गए सेनेटरी पैड बैंक में रखे जाएंगे, वहां से जरूरतमंद गरीब तबके की महिलाएं, बच्चियां उपयोग में ले जाती है। अभी तक 900 से ज्यादा महिलाओं ने बकायदा रजिस्ट्रेशन कराया है। अतिथियों में पायल सिंह वित्त एवं लेखाधिकारी माध्यमिक शिक्षा, जागृति पांडेय जिला अधिकारी नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज, डॉ. इंदू सिंह प्रधानाचार्य राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रयागराज सोनू कनौजिया प्रधान लिपिक राजकीय बालिका इंटर कॉलेज मौजूद रहीं। संयोजक मनोज उपाध्याय नाटकके उद्देश्य पर प्रकाश डाला।कलाकारों में बॉस की भूमिका में नितिन कुशवाहा सहायक भूमिकाओं में अंजू वर्मा, रोशनी मौर्य, अमित डुग्गू, करीम, संगीत परिकल्पना अरविंद यादव, प्रस्तुति नियंत्रण देवेंद्र राजभर, सह निर्देशन अभिनेता कनिष्क सिंह का रहा।

खिलाड़ी अपने अंदर पदक जीतने का जुनून पैदा करें: उज्जवल रमण सिंह

शैलेश कुशवाहा ने 1500 मीटर दौड़ में मारी बाजी

नैनी। पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं करछना विधायक उज्जवल रमण सिंह ने नैनी स्थित अरैल मैदान पर सोमवार को दौड़ प्रतियोगिता का शुभारंभ कर पुरस्कार वितरण किया। 1500 मीटर दौड़ में प्रथम पुरस्कार शैलेश कुशवाहा, द्वितीय पुरस्कार साहिल व तृतीय पुरस्कार दूधनाथ ने प्राप्त किया। मुख्य अतिथि ने खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश की आबादी 26 करोड़ और पदक हरियाणा जैसे छोटे छोटे प्रदेश जीतते हैं, उसी तरह देश की आबादी 126 करोड़ और ओलंपिक में हम लोग एक दो स्वर्ण पदक पर ही संतोष करते हैं। जबकि छोटे छोटे कम जनसंख्या वाले देश हमसे बहुत अधिक पदक जीतने हैं। जो जुनून विदेशी खिलाड़ियों में होती हैं पदक जितने की ललक ही उनका और उनके देश का नाम रोशन करते हैं। खिलाड़ियों से आग्रह करूँगा कि वह पदक जीतने का जुनून अपने अंदर पैदा करें। जिससे प्रदेश व देश का नाम रोशन हो। अतिविशिष्ट अतिथि सपा के जिला उपाध्यक्ष विनय कुशवाहा ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में खिड़कियों को प्रोत्साहित करने का बहुत कार्य हुआ और सम्मान के साथ नकद प्रोत्साहन राशि दिया गया। लखनऊ में विश्व स्तरीय इकाना स्टेडियम का निर्माण कराया। प्रतियोगिता का संचालन कृपा शंकर बिंद, पप्पू इसराइल, राजेश यादव, विजय बहादुर पटेल, कोमल यादव, विमल निषाद, सुरेश, शिव यादव, मोहित यादव, सुनील पाल समेत कई लोग मौजूद रहे।

विकास खंड स्तरीय प्रतियोगिता का प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने किया उद्घघाटन

अखंड भारत संदेस

खण्ड स्तरीय खेल प्रतियोगिता उद्घाटन करते प्रमुख प्रतिनिधि

करछना। लाल बहादुर शास्त्री इंटर कॉलेज धरवारा में सोमवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। जिसमें ब्लाक करछना विभिन्न विद्यालयों की छात्राओं ने रंगोली प्रतियोगिता में शिरकत करके प्रतिभाग किया । प्रतियोगिता का शुभारंभ सरस्वती मां की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के सहित सरस्वती वंदना से हुआ। प्रतियोगिता में कुल 12 टीमों ने प्रतिभाग किया । सीनियर वर्ग की प्रतियोगिता में लाल बहादुर शास्त्री इंटर कॉलेज धरवारा की छात्राएं अव्वल रही। जिसमें रूबी तिवारी दीपांजलि अनुराधा प्रथम स्थान पर रही। वहीं अंबिका सोनी ममता सोनी व अनामिका द्वितीय स्थान पर रही । जूनियर टीम की प्रतियोगिता में पूर्व माध्यमिक विद्यालय खेक्सा की नेहा पटेल अपेक्षा पटेल साक्षी सिंह वैष्णवी सिंह प्रथम स्थान पर रही। वहीं श्रृंगी ऋषि इंटर कॉलेज घटवा की श्रेया सिंह निधि सिंह सेकंड स्थान पर रही । इसके अलावा पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरांव कि श्वेता सिंह मुस्कान साहू आंचल मानवी सिंह ज्योति तीसरे स्थान पर रही। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे करछना ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने प्रतियोगिता में अव्वल रहे प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके हुनरो की प्रशंसा की। साथ ही साथ विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत करके उनका मनोबल बढ़ाया । उन्होंने विद्यालय परिसर में एक सार्वजनिक शौचालय के सहित अमर शहीद गिरीश कुमार शुक्ल की स्मृति में बच्चों के खेल के लिए एक पार्क बनाए जाने की घोषणा भी की। जिससे विद्यालय परिवार गदगद रहा । विशिष्ट अतिथि के रूप में महिला ग्राम प्रधान भडेवरा

रंगोली प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुई छात्राएँ

अनुराधा देवी व केंचुहा गांव की महिला ग्राम प्रधान गुड़िया देवी ने छात्राओं के कला कौशल की प्रशंसा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कालेज के प्रधानाचार्य श्याम नारायण पांडेय ने व संचालन डॉ हरिनाथ भारती ने किया। रंगोली प्रतियोगिता के संयोजक व व्यवस्थापक रहे शिक्षक शांति प्रसाद विश्वकर्मा ने सभी के प्रति आभार जताया। अनिल कुमार भारती उपेंद्र सिंह अनीता सिंह निर्णायक मंडल में शामिल रही। इस मौके पर सुधीर कुमार गुप्ता मनोज शंकर तिवारी अशोक कुमार मिश्र सुरेश सिंह रवि कुमार क्षितीश कुमार तिवारी अनिल कुमार भारती रमेश चंद्र राजेश पांडेय योगेंद्र राम अनिल मिश्र पंकज मिश्र सुशील कुमार राजेंद्र प्रसाद राजमणि विश्वकर्मा श्याम नंदन तिवारी संतोष पांडेय आदि लोग मौजूद रहे।

बोलेरो ने बाइक सवार को मारी टक्कर, हालत गंभीर

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के अकोढ़ा गांव के सामने बोलेरो ने बाइक सवार दो लोगों को टक्कर मार दिया जिसमें दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची एंबुलेंस के माध्यम से घायलों को जिला हॉस्पिटल भेजा गया। जानकारी के अनुसार मनोज कुमार जैसल (28) पुत्र भरत राम निवासी दुबेपुर अपने साथी अरूण जैसल (26) पुत्र रामधनी के साथ दिघिया के तरफ बाइक से आ रहा था जैसे ही वह दोनों अकोढ़ा गांव के समीप पहुंचे सामने से आ रही अनियंत्रित बोलेरो ने टक्कर मार दिया। जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए ग्रामीणों की मदद से घायलों को सीएससी रामनगर भेजा गया जहां हालत गंभीर देख डाक्टरों प्राथमिक इलाज करते हुए जिला अस्पताल भिजवा दिया। मामले की जानकारी पर पहुंचे डायल 112 के पुलिस कर्मियों ने घायलों के परिजनों को मामले से अवगत कराया।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा यूपी बोर्ड हाई स्कूल वर्ष 2010 अनुक्रमांक 1852624 व इंटरमीडिएट वर्ष 2012 अनुक्रमांक 1431821 का अंकपत्र सह प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है।

निर्मल कुमार पुत्र देवेंद्र कुमार
ग्राम जलालपुर पोस्ट
लोकामनपुर, प्रयागराज

बेदखली सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं कामता प्रसाद पुत्र अंगद राम निवासी कशिया पूर्व थाना कोखराज जनपद कौशांबी अपने छोटे पुत्र रमेश कुमार के कुकृत्य अनैतिक असामाजिक हरकतों से तंग आकर आज दिनांक 30 अक्टूबर 2021 से उसे अपने समस्त चल अचल संपत्ति से और अपने व्यक्तिगत जीवन से उसे बेदखल कर रहा हूं आइंदा भविष्य में उसके द्वारा किए गए किसी कृत्यों की जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी वह अपने कृत्यों का स्वयं जिम्मेदार होगा।

कामता प्रसाद पुत्र अंगद राम
निवासी कशिया पूर्व थाना
कोखराज जनपद कौशांबी

प्रतापगढ़ संदेश

मतदाता सूची में नाम अंकित कर युवा करें मतदान : एडीएम

अखंड भारत संदेश

एमडीपीजी कालेज में हुआ कार्यक्रम का शुभारंभ

प्रतापगढ़। विधानसभा निर्वाचक नामावलियों का संक्षिप्त पुनरीक्षण-2022 कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को एमडीपीजी कॉलेज में अपर जिलाधिकारी सुनील कुमार शुक्ल द्वारा किया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में नाम अंकित कराकर ही हम अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे। सभी लोग जिनका नाम मतदाता सूची में शामिल नहीं है वे मतदाता सूची का अवलोकन कर लें तथा मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य शामिल करा लें।

उन्होंने 10 छात्राओं को मतदाता बनाया और उनका नाम मतदाता सूची में पंजीकृत करने हेतु अधीनस्थों को निर्देशित किया। उप जिलाधिकारी सौम्य मिश्र ने कहा कि सभी छात्र-छात्राएं जो 1 जनवरी 2022 को 18 वर्ष की आयु पूरी करते हों मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य शामिल करा लें तथा आसपास के लोगों को भी प्रेरित करें। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र ने कहा कि मताधिकार, लोकतंत्र की खूबसूरती है जिसे संबलता प्रदान करने तथा सजाने व संवारने के लिए आवश्यक है कि हम मतदाता बने और अपने अधिकार का प्रयोग करें। छात्र-छात्राएं अपने आसपास के लोगों को जागरूक कर सभी को मतदाता बनने के लिए न केवल प्रेरित करें अपितु उनके इस कार्य में आवश्यक सहयोग भी करें। कार्यक्रम का संचालन कर रहे वाणिज्य संकाय के अध्यक्ष डॉ छवि नारायण पांडे ने कहा कि मताधिकार लोकतंत्र की नींव है। लोकतंत्र को संजीदा रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम लोग मतदाता नामावली संक्षिप्त पुनरीक्षण के इस कार्य को पूरी तन्मयता से संपादित करें। डॉ मोहम्मद अनीस ने कहा कि कि प्रत्येक विधानसभा मतदेय स्थल पर मतदाता सूची 7 नवंबर, 13 नवंबर, 21 नवंबर एवं 27 नवंबर को उपलब्ध रहेगी। कार्यक्रम में अपर पुलिस अधीक्षक, जिला सूचना अधिकारी विजय यादव, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सुधीर सिंह,डॉ विंध्याचल सिंह, डॉ डीके पांडे, डॉ किरण मिश्र, अमिता मिश्रा, डॉ गीता शुक्ला आदि ने छात्र -छात्राओं को प्रेरित किया। कार्यक्रम में अन्य विभागीय अधिकारियों के अलावा बड़ी संख्या में सदर के बीएलओ एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

पुलिस अधीक्षक ने किया यातायात माह का शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

यातायात नियमों की दी गई जानकारी

प्रतापगढ़। यातायात पुलिस प्रतापगढ़ द्वारा यातायात माह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल द्वारा यातायात माह नवम्बर का उद्घाटन किया गया। इस दौरान वहां उपस्थित लोगों को हेलमेट वितरित कर यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया गया।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने कहा कि यातायात नियमों का पालन करना हर नागरिक के लिये सुरक्षा की दृष्टि से बहुत जरुरी है। इसके लिये लोगों में जागरुकता होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि हेलमेट लगाने से दुर्घटना होने पर भी लोगों का जीवन बच जाता है इसलिये उन्होंने इस कार्यक्रम में हेलमेट भी वितरित किया और कहा कि इसका सदुपयोग किया जाना चाहिये। यातायात नियमों के प्रति जागरूकता एवं सुरक्षित परिवहन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित होने वाले यातायात माह में 30 नवम्बर तक निरन्तर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनमानस को जागरूक किया जायेगा।

कालाकांकर गंगातट किनारे मनाया गया आजादी का अमृत महोत्सव

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कालाकांकर गंगातट किनारे वन संरक्षण डीएसओ प्रतापगढ़ वरुण सिंह, पीआर रावत, अवध बिहारी, भैयाराम पाण्डेय, दिनेश कुमार ने अपने स्टाफ के साथ सोमवार को गंगा संरक्षण एवं आजादी का महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया जिसमे इंटर कालेज के छात्र छात्रों ने बढ़ चढ़ कर सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें गंगातट किनारे साफ सफाई के साथ वृक्षारोपण व गंगा आरती दीपदान किया। कार्यक्रम में हनुमत इंटर कालेज कालाकांकर के छात्र छात्राओं ने अपनी सहभागिता निभाई। पूर्व सांसद राजकुमारी रतन सिंह के पुत्र युवराज भुवन्यू सिंह ने दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को उत्साह बढ़ाते हुए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम में कुँवर मनीष सिंह, डॉ घनश्याम यादव, कुँवर अनूप सिंह, एडीओ पंचायत संतोष कुमार शुक्ला सहित वन विभाग के सभी कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल का कुंडा में हुआ जोरदार स्वागत

प्रतापगढ़। किसान नौजवान पटेल यात्रा इलाहाबाद से लौट रहे सपा प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल सपा जिला अध्यक्ष छविनाथ यादव के बड़े भाई पूर्व चेयरमैन कुंडा गुलशन यादव के वैष्णो कॉलोनी कुंडा स्थित आवास पहुंचे। इससे पहले समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष छविनाथ यादव के नेतृत्व में समाजवादी कार्यकर्ताओं ने सपा प्रदेश अध्यक्ष का फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए क्षेत्रीय पार्टी जनसत्ता दल से गठबंधन को भी अफवाह बताया और कहा कि समाजवादी पार्टी मजबूती के साथ चुनाव मैदान में उतरेगी। इस दौरान पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल, धर्म राज सिंह पूर्व सांसद, पूर्व मंत्री अंसार अहमद, जिला अध्यक्ष कौशाम्बी दयाशंकर यादव, जिला अध्यक्ष प्रयागराज योगेश चन्द्र यादव, मानसिंह यादव, महासचिव अब्दुलविजय यादव आदि लोग मौजूद रहे।

नाटक मंचन द्वारा साफ-सफाई का दिया गया संदेश

अखंड भारत संदेश

ईओ ने नाटक मंचन का दीप जलाकर किया शुभारंभ

प्रतापगढ़। नगर के केपी इंटर कालेज मैदान में नगर पालिका द्वारा आयोजित दीपावली उत्सव मेला में रविवार की शाम नाटक मंचन द्वारा मच्छरों को नियंत्रित करने, स्वस्थ रहने के लिये साफ-सफाई रखने व शौचालय का प्रयोग कर स्वच्छता को अपनाने आदि प्रेरणादायक नाटक प्रस्तुत किये गये।

प्रारंभ में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम की शुरुआत किया। फिर नाटक मंचन की शुरुआत हुई। इसकी उपस्थित लोगों ने जमकर सराहना की। कार्यक्रम के मध्य में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने सरदार पटेल के चित्र पर माल्यार्पण कर एकता एवं अखण्डता की शपथ दिलाया। उन्होंने कहा कि इस मेले का उद्देश्य लोगों में साफ-सफाई के प्रति जागरुक करने का है जिससे संक्रामक रोग नजदीक न आ सके। इस दीपावली उत्सव में बच्चों के लिये झूले लगे हैं तथा अचार, मुरब्बा व खाने पीने की दुकानें आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। दीपावली उत्सव मेले की व्यवस्था में अधिशाषी अधिकारी के साथ ही आरआई लाल बहादुर सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, स्वच्छ भारत मिशन के आशीष मिश्रा, मिथिलेश सिंह, प्रशांत सिंह, महेश तिवारी, सुरजीत सिंह, अनिल, विमलेश आदि सक्रिय रहे। दीपावली उत्सव मेले में नाटक मंचन को देखने के लिये देर रात तक भीड़ जुटी रही।

कोविड-19 जागरूकता अभियान का किया गया आयोजन

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। सोमवार को विकास खंड पट्टी ब्लॉक परिसर में कोविड-19 जागरूकता अभियान विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार की सहायता से एक फाउंडेशन दाउदपुर पट्टी प्रतापगढ़ द्वारा आयोजित किया गया जिसमें लोगों को कोविड-19 से बचने के उपायों के बारे में विस्तार से बताया गया।

महामारी से बचने के लिए सरकार द्वारा की जा रही सहायता और मरीजों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में चर्चा की गई। कार्यक्रम के प्रचार हेतु ग्रामोत्थान आजीविका स्वयं सहायता समूह हरिपुर बरदैता तथा उद्यमी आजीविका स्वयं सहायता समूह हरिपुर बरदैता का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में मुख्य रूप से राम गुलाब सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता बहादुर सिंह एडवोकेट, रामचरित्र वर्मा, पूर्व चेयरमैन जुग्गीलाल जायसवाल, परशुराम ओझा, अशोक कुमार सिंह सहित कई लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख पति राकेश कुमार सिंह रहे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पट्टी के अधीक्षक डॉ0 नीरज सिंह रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सिंह इंटर कॉलेज पट्टी के प्रबंधक पवन सिंह ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर विजय यादव ने किया।

तीन नवम्बर से कार्डधारकों को मिलेगा निःशुल्क राशन

प्रतापगढ़। जिला पूर्ति अधिकारी रीना कुमारी ने बताया है कि माह नवम्बर के प्रथम चरण में कार्डधारकों को 3 नवम्बर से 15 नवम्बर के बीच प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अन्तर्गत निःशुल्क गेहूँ का वितरण उचित दर विक्रेताओं द्वारा ई-पॉस मशीन के माध्यम से किया जायेगा। इस अवधि में अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारक यूनिट के आधार पर 05 किग्रा0 गेहूँ प्रति व्यक्ति निःशुल्क प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त केवल अन्त्योदय कार्डधारकों को माह अक्टूबर से दिसम्बर (03 माह) हेतु, 01 किग्रा0 चीनी प्रति अन्त्योदय कार्ड के अनुसार कुल 03 किग्रा0 रू0 18 प्रति किग्रा0 की दर से वितरित किया जायेगा।

एटीएम से धोखाधड़ी कर पैसा निकालने वाले दो अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कुण्डा से उ0नि0 उमेश प्रताप सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर कस्बा कुण्डा के बैंक आफ बड़ौदा एटीएम के पास से एटीएम हैकर गिरोह के दो सदस्यों बृजेश सिंह उर्फ गुड्डू सिंह पुत्र स्व0 रामपाल सिंह नि0 ऐमा अस्भों ऊंचागांव थाना मानिकपुर व अशोक उर्फ राजू सोनकर पुत्र स्व0 हीरालाल नि0 अल्लोपुर बुखारी थाना कुण्डा को गिरफ्तार किया गया जिनके कब्जे से विभिन्न बैंकों के अलग-अलग नामों के 26 अदद एटीएम कार्ड बरामद किया गया।

गिरफ्तार अभियुक्तों ने पूछताछ में बताया कि हम दोनो लोग मिलकर एटीएम से पैसा निकालने वालों के साथ धोखाधड़ी कर उनका पैसा निकाल लेते है। इसके लिए हम एटीएम के पास खड़े रहते है, जो व्यक्ति पैसा निकालने आता है उसके नजदीक खड़े होकर चुपके से उसका कोड देख लेते है एवं उसका ध्यान भटकाकर एवं झांसा देकर उसका एटीएम कार्ड बदल कर या उस कार्ड का क्लोन बना लेते है, और उस कार्ड से पैसे निकालकर हम लोग आपस में बांट लेते है। पुलिस टीम में उ0नि0 उमेश प्रताप सिंह, उ0नि0 शिव प्रसाद रावत, आरक्षी राम लखन, आरक्षी इन्द्रजीत सिंह व आरक्षी गौरव थाना कुण्डा शामिल रहे। उधर थाना मान्धाता पुलिस द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना क्षेत्र के भिन्न-भिन्न स्थानों से तीन व्यक्तियों बृजेश सिंह उर्फ साधू पुत्र स्व0 तेज बहादुर सिंह नि0 बासूपुर, लाखूपुर थाना मान्धाता एक किलो 600 ग्राम अवैध गांजा के साथ, पुष्पराज सिंह पुत्र स्व0 राम लखन सिंह नि0 हैंसी जय चन्द्र तिवारीपुर थाना मान्धाता को एक किलो 800 ग्राम अवैध गांजा के साथ व बादल कुमार पुत्र राजेश कु□ार□मार नि0 हैंसी परजी थाना मान्धाता को 600 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना मान्धाता पर तीनों अभियुक्तों के विरूद्ध क्रमशः मु0अ0सं0 410/21, मु0अ0सं0 411/21, मु0अ0सं0 412/21 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया है। पुलिस टीम में उ0नि0 शहंशाह खान, उ0नि0 राकेश चौरसिया व उ0नि0 दयाल दास मय हमराह थाना मान्धाता शामिल रहे।

कहवई से निकली मां चामुंडा की शोभायात्रा

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय के कहवई गांव निवासी शिक्षक आसाराम यादव के संयोजन में मां चामुंडा की शोभायात्रा कहवई से निकली गई जो कहवई बाघराय व शिवमन्दिर व हनुमत धाम व मां काली धाम होते हुए चामुंडा धाम पहुची जगह-जगह भक्तों ने पूजन अर्चन करके शोभा यात्रा का स्वागत किया आचार्य कृष्ण शंकर मिश्र ने विधिवत माता रानी की पूजा अर्चना की।

शोभा यात्रा का चामुंडा धाम पर प्रमुख पुजारी श्याम महाराज ने पूजन अर्चन करते हुए कहा कि माता रानी की कृपा से जो भी भक्त अपनी मनन्तें मानता है देवी जी उसकी मनन्ते पूरी करती

मथुरा का पुरवा में हुई भागवत कथा

है सच्चे मन से की गई पूजा कभी व्यर्थ नहीं जाती मां चामुंडा की महिमा निराली है। समापन के मौके पर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया हजारों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।

संयोजक आसाराम यादव शिक्षक ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस मौके पर विहिप के प्रमुख नेता जटाशंकर त्रिपाठी अजय सिंह एवं पूर्व प्रधान बबलू पांडे एवं विपिन सिंह, अनिल पांडे, क्षेत्र पंचायत सदस्य हीरेन्द्र प्रताप सिंह, बीडीसी घनश्याम यादव एवं प्रधान बृजेश कुमार, शिक्षक शशिकांत मिश्र, विजय, संतोष, राजेश, सुरेंद्र, राम आसरे, जगदीश, ज्ञानेंद्र, रामसूरत समेत हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। उधर बाघराय क्षेत्र के मथुरा का पुरवा भाव गांव स्थित माता मैया के मंदिर पर भागवत कथा के शुभारंभ के पहले कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा डण्डेश्वर नाथ धाम साहू की चरही स्थित हनुमत धाम, भाव चौराहा, लाल साहब का पुरवा, होते हुए भैरव नाथ धाम भाव पहुंची इसके बाद कलश यात्रा सीधे कथा स्थल पर पहुंचो। कथावाचक डॉ राजेश शुक्ला जी महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ कलश स्थापित कराकर श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ किया।

ऊंचाहार एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आने से युवक की दर्दनाक मौत, परिजनों में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज-लखनऊ रेलवे ट्रैक पर सोमवार की सुबह लगभग नौ बजे परियावा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर ऊंचाहार की तरफ से प्रयागराज को जा रही ऊंचाहार एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। घटना की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सभी घटना स्थल की ओर दौड़ पड़े लोगो की भारी भीड़ जमा हो गई।

बताया जाता है कि नवाबगंज थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत आलापुर के गुलरहीबाग निवासी विनोद कुमार सरोज पुत्र मातादीन सरोज (32) वर्षीय सोमवार की सुबह अपनी खेत की तरफ गया हुआ था। वहां से लौटने पर परियावा स्टेशन पर ऊंचाहार एक्सप्रेस ट्रेन आ रही थी जो प्लेटफार्म नंबर एक पर नीचे खड़ा हो गया। ट्रेन छूटने के बाद जैसे ही ट्रेन की सबसे लास्ट वाली बोगी गुजरने लगी कि अचानक रेलवे ट्रैक पार करना चाहा कि बोगी की चपेट में आ गया, जिससे मौके पर मौत हो गई। ट्रेन के नीचे विनोद के चले जाने से शोर मच गया जिससे ट्रेन को गार्ड ने रोक दिया और वाकी टाकी से गार्ड ने ड्राइवर व स्टेशन मास्टर को घटना की जानकारी दी। उसके बाद ट्रेन आगे के लिए रवाना हुई। घटना की खबर मिलते ही ऊंचाहार आरपीएफ व जीआरपी मौके पर पहुंची और शव की लिखा पढ़ी करके पीएम के लिए रायबरेली भेजा। घटना की खबर मिलते ही नवाबगंज पुलिस मौके पर पहुंची। घटना क्षेत्र रेलवे में होने के कारण जानकारी करके वापस चली गई। मृतक विनोद चार भाइयो में दूसरे नंबर का था। मृतक की पतने शोभा देवी का रो-रोकर बुरा हाल है। अपने पांच साल के लड़के देवांश को लेकर चीख चीख कर रोती रही। घटना से गाव में सननटा छाया रहा।

पिकप गाड़ी में विद्युत तार छू जाने से हुई युवक की मौत

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के करैनी पचमहुआ गांव में राजाराम प्रजापति (38) वर्ष पुत्र रमई प्रसाद प्रजापति पिकअप गाड़ी चलाकर किसी तरह अपने परिवार का जीव को पालन करता था। आज गांव की लल्लू का धान लादकर बाजार ले जा रहा था तभी करैनी चौराहे के पास पिकअप गाड़ी के ऊपर जर्जर विद्युत तार गिर जाने से करंट की चपेट में आने से पिकअप चालक राजाराम प्रजापति की मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना को देखते ही देखते सैकड़ों लोग मौके पर जुट गए। आसपास के लोगों ने इलाज के हेतु चिकित्सक के पास ले गए किंतु राजा राम की मौत पहले ही हो चुकी थी मौत की सूचना पर परिजनों में कोहराम मच गया पतने गायत्री देवी बेटा राज बेटा शिवा पुत्री रागिनी का रो रो कर बुरा हाल है।

खबर संक्षेप

विधिक साक्षरता शिविर का किया गया आयोजन

कौशाम्बी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 46 ग्राम सभा एवं 14 शहरी क्षेत्रों में डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया है। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से शासन द्वारा जन सामान्य के कल्याणकारी योजनाओं के विषय पर विधिक साक्षरता एवं सहायता हेतू जागरूक किया गया। जिसमें आठ ब्लॉक के सीडीपीओ आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं एनजीओ व समाज सेवी उपस्थित रहे।

भैंस चोरी कर उसका बेच लिया गोश्त

अझुवा कौशांबी। पइंसा थाना क्षेत्र में लंबे समय से पशुओं का वध किए जाने का सिलसिला चल रहा है मोहब्बतपुर पइंसा थाना क्षेत्र के अफजलपुर वारी के मजरा ऐमा वारी निवासी दुर्गा प्रसाद पुत्र दुबरी की भैंस बीती रात घर से चोर उठा ले गए हैं सुबह दुर्गा प्रसाद को भैंस चोरी की जानकारी हुई तो वह भैंस खोजते खोजते अगल बगल के गांव तक पहुंच गया उसने देखा कि बगल में फतेहपुर जनपद की सीमा के एक गांव में कुएं में उसकी भैंस का सिर कटा हुआ पड़ा है आसपास खून बिखरा हुआ है उसने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि भैंस को काटकर उसका गोश्त चोर उठा ले गए हैं और उसको विक्रय कर दिया है लंबे समय से इलाके में पशुओं को काटकर उनका गोश्त बेचने का सिलसिला चल रहा है।

क्षमता से अधिक सवारी बैठाने पर वाहनों के खिलाफ कार्यवाही का विधायक ने दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

यातायात जागरूकता रैली को डीएम व एसपी के साथ हरी झंडी दिखाते सिराथू विधायक शीतल्रा प्रसाद

कौशाम्बी। विधायक सिराथू शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा ने यातायात माह नवम्बर 2021 का शुभारम्भ तथा यातायात जागरूकता रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक ने आमजन से यातायात नियमों का अनुपालन करने का आग्रह करते हुए कहा कि यातायात नियमों का पालन न करने के कारण सड़क दुर्घटनायें हो रही है। उन्होंने महाविद्यालयो एवं कालेजों में छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि बाइक पर दो से ज्यादा लोग न बैठे, हेलमेट एवं चार पहिया वाहन चलाते समय सीटबेल्ट का प्रयोग करें तथा ओवरस्पीड व मोबाइल पर बात करते हुए वाहन न चलायें। उन्होंने क्षमता से अधिक सवारी बैठाने वाले वाहनों के खिलाफ कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि चालक मालिक वाहन में निर्धारित क्षमता के अनुसार ही बच्चों को बैठायें।

जिलाधिकारी ने कहा कि यातायात नियमों का अनुपालन कर एवं सतर्कता रखते हुए सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। उन्होंने आमजन से बाइक चलाते समय हेलमेट पहनने एवं चार पहिया वाहन चलाते समय सीटबेल्ट लगाने तथा गलत दिशा में गाड़ी न चलाने का कड़ाई से अनुपालन करने का आग्रह करते हुए कहा कि इससे हम अपनी और दूसरों की भी जान बचा सकते हैं पुलिस अधीक्षक ने कहा कि यातायात माह 01 नवम्बर 2021 से 30 नवम्बर 2021 तक मनाया जायेगा। उन्होंने आमजन से वाहन में मानक के अनुसार नम्बर प्लेट लगाने तथा यातायात नियमों का अनुपालन करने एवं शराब पीकर वाहन न चलाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यातायात माह का उद्देश्य है कि आमजन को अधिक से अधिक जागरूक किया जाय महाविद्यालयो एवं कालेजों में छात्र-छात्राओं को जागरूक करने के साथ ही रैली एवं स्लोगन आदि माध्यमों से जागरूक किया जायेगा तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा कैम्प लगाकर वाहन चालकों के आंख की जांच भी की जायेगी। ब्लैक स्पॉट चिन्हित कर आवश्यक कार्यवाही की जायेगी ताकि दुर्घटनायें न होने पाय। उन्होने सड़क पर ट्रक खड़ी करने वालों के विरूद्ध जुमार्ना लगाये जाने के भी निर्देश दिये।

यातायात जागरूकता रैली को हरी झण्डी दिखाकर किया गया रवाना

छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने पर दिया गया विशेष बल

सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर उनके चित्र पर डीएम, एडीएम ने अर्पित किया श्रद्धासुमन

कौशाम्बी। सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जयन्ती के अवसर पर कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) जयचन्द्र पांडेय ने सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के चित्र पर माल्यार्पण तथा श्रद्धासुमन अर्पित किया। जिलाधिकारी ने सभागार में उपस्थित लोगो को राष्ट्र के प्रति एकता एवं अखण्डता की शपथ ह्न मैं सत्यनिष्ठा से शपथ लेता हूँ कि मैं राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूंगा और अपने देशवासियों के बीच यह संदेश फैलाने का भी भरसक प्रयत्न करूंगा। मैं यह शपथ अपने देश की एकता की भावना से ले रहा हूँ, जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता एवं कार्यों द्वारा संभव बनाया जा सका। मैं अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प करता हूँ।ह्न दिलायी।

न्यूज झरोखा

मेहता कॉलेज में प्रबोध श्रीवास्तव ने प्राचार्य का ग्रहण किया पद

मेहता कॉलेज में शिक्षा ग्रहण करने के बाद प्रबोध श्रीवास्तव उसी विद्यालय में बने प्राचार्य, कस्बा भरवारी सहित आसपास के सैकड़ो लोगो ने प्राचार्य को फूल मालाओं से लादकर किया स्वागत

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी अंतर्गत बीएस मेहता महा विद्यालय के प्राचार्य के पद पर प्रबोध कुमार श्रीवास्तव ने पदभार ग्रहण किया इस मौके पर कस्बा के सैकड़ो गणमान्य संभ्रांत लोगो ने फूल माला पहनाकर गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। आपको बतादे कि प्राचार्य की जीवन शैली पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि हाई स्कूल सन 1986 नेशनल इंटर कॉलेज भरवारी से और इंटरमीडिएट 1988 में दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा से तथा 1991 में इसी मेहता कॉलेज से बीएससी उत्तरीर्ण करके 2001 में प्रवक्ता के पद पर चयनित होने के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कार्यरत हुए ठीक बीस वर्ष का लंबा सफर व कड़ी मेहनत पक्का इरादा ने इनको प्राचार्य बनने से कोई रोक नही सका आज आयोग के आदेश का पालन करते हुए भरवारी बी एस मेहता कॉलेज में निदेशक संदीप सक्सेना की उपस्थिति में पदभार ग्रहण किया इस मौके पर कॉलेज की श्रद्धा तिवारी विवेक त्रिपाठी डॉ आदिल स डॉ सी पी श्रीवास्तव सतीश तिवारी प्रचार्य नेशनल इंटर कॉलेज के जीपी दिवेदी करुणेश त्रिपाठी नीरज कौशल के अलावा पूर्व में कौशाम्बी में तैनात एवम समाज कल्याण अधिकारी मंजू श्रीवास्तव एवम उत्तराखंड के आई पी एस अधिकारी मनीष श्रीवास्तव आदि सैकड़ो लोग मौजूद थे।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पीएम सीएम के विकास योजनाओं का बखान

भरवारी कौशाम्बी। भरवारी कस्बे में आयोजित दीपावली मेला महोत्सव में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन डॉ आभा श्रीवास्तव भारतीय जनता पार्टी सांस्कृतिक प्रकोष्ठ काशी क्षेत्र की सह संयोजक द्वारा आयोजित किया गया सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के माध्यम से सह संयोजक राजीव तिवारी के सहयोग से एक वृहद नाटक समारोह का आयोजन दीपावली मेला महोत्सव में जनता के बीच किया गया, नुक्कड़ नाटक का विषय प्रधानमंत्री की विभिन्न योजनाओं तथा मुख्यमंत्री की विभिन्न योजनाओं पर आधारित रहा जन समुदाय के बीच नाटक के माध्यम से प्रदर्शन कर कलाकारों ने जनता को सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागृत करने का सफल प्रयास किया।, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एसडीएम राजेश कुमार श्रीवास्तव सीडीओ विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा अधिशासी अधिकारी गिरीश चंद्र के अलावा अनेक पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में एक शानदार कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई, नुक्कड़ नाटक के कलाकारों द्वारा किया गया यह नाटक लोगों के दिल को छू गया,मेले में एक बार तथा मंच पर दो बार नुक्कड़ नाटक कलाकारों ने प्रस्तुत किया। नाटक में प्रमुख रूप से राहुल चावला नवीन मिश्र, मनजीत ,शिवम प्रताप सिंह, मोहम्मद साजिद, लव-कुश भारतीय, ने अपनी महती भूमिका निभाई।कार्यक्रम आयोजक डॉ आभा श्रीवास्तव सहसंयोजक काशी क्षेत्र राजीव तिवारी सह संयोजक कौशांबी जिला के सहयोग से प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री के विकास योजनाओं पर प्रस्तुत किए गए नुक्कड़ नाटक की भूरि भूरि प्रशंसा की गई है

बड़ौदा स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हुआ पौधारोपण

कौशाम्बी। बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान में चल रहे 10 दिवशीय सूकर पालन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण प्रांगण में पौध रोपण किया गया। इस मौके पर वक्ताओं ने पौधारोपण से होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से चर्चा की है। कार्यक्रम मे प्रशिक्षक नीरज आर्य ने पर्यावरण सुरक्षा पर प्रकाश डालते बताया कि अपने आस पास के वातावरण को शुद्ध रखने के लिए वृक्षों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान हैं। संस्थान के वरिष्ठ कार्यालय सहायक परीक्षित मौर्य ने भी पर्यावरण के महत्व बारे में बताया उन्होंने कहा कि एक पेड़ 100 पुत्र समान है अर्थात एक वृक्ष लगाना 100 पुत्रो के समान है इस मौके पर सभी प्रशिक्षणार्थी गण उपस्थित रहे।

भगवान राम के वन गमन करने पर फूट फूट कर रोए अयोध्या नरेश राजा दशरथ

सिराथू कौशाम्बी। तहसील के उदहिन बुजुर्ग बाजार में चल रही दस दिवसीय रामलीला के सातवें दिन भगवान राम चन्द्र जी के वन गमन की लीला दिखाई गई। भगवान राम जी के शुभ विवाह के कुछ दिन बाद अयोध्या नरेश महाराज दशरथ ने विचार किया कि राम को अयोध्या का राजा बनाया जाए। उन्होंने अपने मंत्री सुमंत को बुलाकर भगवान राम को राजा बनाए जाने एवं जल्द से जल्द रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक करने का आदेश दिया। यह सूचना जैसे ही महारानी कैकेई की दासी मंथरा को प्राप्त हुई, मंथरा ने महारानी के कान भरना शुरू कर दिया। महारानी कैकेई मंथरा की बातों को मानकर राजा दशरथ से अपने पुराने दो वरदान मांगे। राजा दशरथ ने महारानी कैकेई को दोनों वरदान देने का निर्णय करते हुए कहा कि हम रघुवंशी हैं, हम अपने दिए गए वचन को निभाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। महराज दसरथ ने कहा कि रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन न जाई.. राजा दशरथ से महारानी कैकेई ने कैकेई पुत्र भरत को राजतिलक और कौशल्या पुत्र राम को चौदह वर्ष का वनवास मांगा। यह सूचना जैसे ही भगवान राम को मिली, भगवान राम तुरन्त वन गमन को तैयार हो गए। जैसे ही भगवान राम के वन गमन की सूचना महराज दसरथ को हुई, वो विचलित और व्याकुल हो गए। जैसे ही भगवान राम, सीता जी और लक्ष्मण जी के साथ वन गमन करने को प्रस्थान किया, राजा दशरथ फूट फूट कर रोने लगे और पूरी अयोध्या नगरी में शोक छा गया। भगवान राम के साथ अयोध्या के हजारों नर, नारी भी वन गमन करने को तैयार हो गई। इसके बाद भगवान राम तमसा नदी के किनारे पहुंचे जहां उन्होंने रात्रि विश्राम किया। इस मौके पर राम जानकी दशहरा मेला कमेटी के मुख्य संरक्षक डॉ राजेंद्र प्रसाद, संरक्षक ग्राम प्रधान दशरथ लाल, महासचिव कल्लू केसरवानी, उपाध्यक्ष बृजेन्द्र तिवारी, ज्ञान प्रकाश केसरवानी, शैलेन्द्र श्रीवास्तव, नरेंद्र दुबे, शिवम सोनी, टिंकू मौर्य आदि लोग मौजूद रहे।

पुरानी ईटों को नई ईट बनाने का गुर सीख गए चिकित्सक

अखंड भारत संदेश

सीएचसी चायल में व्याप्त भ्रष्टाचार पर चुप्पी साध गए आला अधिकारी

पुरानी अस्पताल परिसर से इंटरलॉकिंग ईट उखड़वाये जाने का दृश्य

कौशाम्बी। मरीजों का इलाज करते करते आप तो विज्ञान की भी जानकारी चिकित्सकों को हो गई है पुरानी ईंटों को नया बनाने का गुण चिकित्सक सीख गए हैं ताजा मामला सीएचपी चाइल्ड का है जहां पुरानी ईंटों को उखाड़कर नई के बताकर सीएचसी में लगाया जा रहा है भ्रष्टाचार में लिप्त चिकित्सक के इस कारनामे पर आला अधिकारियों ने चुप्पी साध रखी है जिससे सरकारी खजाने को खुलेआम लूटने में चिकित्सक लगे हैं यदि चिकित्सक के इस कारनामे पर जांच हुई तो चिकित्सक पर निलंबन की कार्यवाही तय है लेकिन मुख्य चिकित्सा अधिकारी कहां चिकित्सक को निलंबित करने का साथ कर पाएंगे।

बताते चलें कि चायल ब्लॉक के पीएचसी से में पुरानी इंटरलॉकिंग का ईट निकाल कर नए सीएचसी हॉस्पिटल में लगाया जा रहा है स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों की माने तो सीएचसी में ईट लगाने के लिए बजट स्वीकृत हो चुका और सरकारी खजाने से रकम निकल चुकी है सरकारी योजना को ताक पर रख कर इस योजना का लाभ चिकित्सक की साठगांठ से ठेकेदार ले रहे हैं अब नए तरीके से सरकारी धन में लूट मचाया गया है ठेकेदारों चिकित्सक का मानना है कि पुरानी हॉस्पिटल अब कोई अधिकारी जांच करने नही जायेगा इस लिए भ्रष्ट अधिकारियों ने पुराने अस्पताल से इंटरलॉकिंग को निकलवा कर सीएचसी अस्पताल में लगवा दिया है लोगो का मानना है कि अब लगता है सरकार के पास बजट नही है इस लिए ठेकेदारों ने पुराने ईट से खडंजा इंटरलॉकिंग का काम कराया जा रहा है। बताया जाता है कि पुरानी ईट निकाल कर लगाए जाने के बाद भी सरकारी खजाने से नई ईट की रकम निकाल ली गई है पुरानी ईट से नई ईट बनाने का खेल जानने वाले चिकित्सक के कारनामे पर जांच हुई तो इन पर कठोर कार्रवाई होना तय है।

गोबर के ढेर में जिंदा मिला मासूम

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के बालक मऊ के बाहर गोबर के ढेर में एक मासूम रोते बिलखते ग्रामीणों को मिला है किसी निर्दई मां ने मासूम के जन्म के बाद उसे लोक लाज के भय से गांव के बाहर फेंक दिया है मासूम के रोने की आवाज ग्रामीणों को हुई तो मामले की जानकारी ग्रामीणों ने पुलिस को दी है।

एटीएम बदलकर ठग ने बैंक से निकाले 28 हजार रुपए

करारी कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के करारी कस्बा के रहने वाले मुकेश कुमार के एटीएम को बदलकर ठगों ने उनके बैंक खाते से 28 हजार रुपए पार कर दिया है मामले की सूचना पीड़ित मुकेश कुमार ने पुलिस अधीक्षक को दी है जिस पर पुलिस अधीक्षक ने साइबर सेल को मामले की जांच कर ठगों को गिरफ्तारी का निर्देश दिया है पुलिस की जांच में मालूम हुआ कि स्टेट बैंक आफ इंडिया की ओसा स्थित एटीएम से 28 हजार रुपए की रकम निकाली गए हैं जिस पर साइबर क्राइम ब्रांच के अधिकारियों ने स्टेट बैंक ओसा के प्रबंधक को पत्र लिखकर सीसीटीवी के फुटेज उपलब्ध कराने की मांग की है उम्मीद जताई जा रही है कि जल्द ही ठग पुलिस के चंगुल में होगा।

गोवध करने वालों की शिकायत करने पर भाजपा नेता पर प्राणघातक हमला

तीन महीने बीत जाने के बाद भी हमलावरों की गिरफ्तारी ना होने पर अधिकारियों नेताओ का चक्कर काट रहे हैं भाजपा नेता

पन्द्रह हजार रुपए महीने लेकर गोवध कराए जाने का पुलिस पर आरोप लगने के बाद नही चेते अधिकारी

कौशाम्बी। योगी सरकार से लेकर पुलिस आला अधिकारी भले ही संगठित अपराधों पर रोक लगाए जाने की बात कर रहे हो लेकिन सच्चाई यह है कि संगठित अपराध बेखौफ तरीके से फल-फूल रहा है गांजा की बिक्री जुआ शराब के अड्डे पशुओं की तस्करी गोवध के धंधे हरे पेड़ों की कटाई सट्टे का खेल अवैध आरा मशीन का संचालन डग्गामार वाहन बालू का अवैध कारोबार ओवरलोड ट्रक सहित विभिन्न संगठित अपराध बेखौफ तरीके से फल फूल रहे हैं गोवध करने वालों की शिकायत थाना पुलिस से करने पर भाजपा नेता पर प्राणघातक हमला कर दिया गया प्राण घातक हमले के मामले में काफी प्रयास के बाद मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने मुकदमा तो दर्ज कर लिया है लेकिन 3 महीने से अधिक बीत जाने के बाद भी गोवध करने वाले प्राणघातक हमला के आरोपियों की गिरफ्तारी मंझनपुर पुलिस ने नहीं की है भाजपा नेता पर हमला करने वाले की गिरफ्तारी की सिफारिश सांसद विधायक भी कर चुके हैं लेकिन फिर भी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई है। बताते चलें कि नफीस अहमद कांशी राम कॉलोनी समदा मंझनपुर भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ में जिला महामंत्री हैं इनके मोहल्ले के कुछ युवक गो वध का व्यवसाय करते हैं। बताया जाता है कि गोवध के व्यवसाइयो से मंझनपुर कोतवाली पुलिस का एक सिपाही 15 हजार रुपए महीना की वसूली कर रहा जिससे गो वध का व्यवसाय बेरोकटोक चलता है इस बात की शिकायत भाजपा नेता नफीस अहमद ने पुलिस अधिकारियों से की जिस पर गोवध में लगे धंधे बाजो की गिरफ्तारी तो नहीं हो सकी लेकिन उन तक सूचना जरूर पहुंच गयी जिससे बौखलाए अपराधियों ने नफीस अहमद पर प्राणघातक हमला कर दिया बड़ी जद्दोजहद के बाद 11 जुलाई को पुलिस ने गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया लेकिन 3 महीने से अधिक बीत जाने के बाद गो वध के धंधे में लिप्त लोगों की गिरफ्तारी पुलिस नहीं कर सकी है।

फिर योगी की सरकार बनाकर विकास के पथ पर प्रदेश को करना है मजबूत :नम्रता

अखंड भारत संदेश

महिला शक्ति ने किया महिला मोर्चा का उत्साह वर्धन

भाजपा महिला मोर्चा की क्षेत्रीय अध्यक्ष नम्रता चौरसिया को गणेश प्रतिमा भेंट करती भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष संगीता सरोज

कौशाम्बी। कमल शक्ति संवाद महिला मोर्चा की महत्वपूर्ण कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय अध्यक्ष महिला मोर्चा नम्रता चौरसिया का जनपद में प्रथम आगमन होने के पश्चात महिला शक्ति ने महिला मोर्चा का उत्साह वर्धन किया और महिलाओं के अंदर जोश भरने का उन्होंने काम किया इसी क्रम में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष संगीता सरोज ने इस कार्यक्रम का संचालन किया जिला पंचायत अध्यक्ष विशिष्ट अतिथि कल्पना सोनकर के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में महिला मोर्चा के सभी पदाधिकारियों एव शक्ति केंद्र को प्राप्त हुआ। इसी क्रम क्षेत्रीय अध्यक्ष महिला मोर्चा नम्रता चौरसिया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया और चंद शब्दों में कहा कि जिस तरह से यहां पर महिलाओं की भीड़ इकट्ठी हुई है इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय जनता पार्टी जनपद से तीनों विधानसभा सीट को जीतकर भारतीय जनता पार्टी शीर्ष नेतृत्व की झोली में डालने का काम करेंगे इसी क्रम मे नम्रता चौरसिया क्षेत्रिय अध्यक्ष ने कहा कि 2022-का मिशन महिला मोर्चा के लिए इतना बड़ा आसान काम नहीं है-लेकिन हमें अपने महिला मोर्चा कार्यकताओं पर पूरा भरोसा है एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी की सरकार उत्तर प्रदेश में अवश्य बनेगी योगी आदित्यनाथ महाराज जी के नेतृत्व में हम सभी लोग उत्तर प्रदेश को एक मजबूत कड़ी की ओर लेकर चलने का काम करेंगे उन्होंने कहा कि जिस तरह से हर क्षेत्र में योगी आदित्यनाथ महाराज ने काम किया है उसकी जितनी भी सराहना की जाए वह कम है चाहे लाक डाउन का समय हो चाहे विकास के मुद्दे की बात हो चाहे तीन तलाक बिल का हो चाहे राम मंदिर का फैसला हो चाहे किसान भाइयों के बिल पास करने का हो हर क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराज ने सभी को मजबूती प्रदान किया है इस मौके पर अनीता त्रिपाठी कविता केसरवानी जिला महामंत्री महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष शक्ति केंद्र एव बूथ अध्यक्ष उपस्थित रही साथ में समस्त पदाधिकारियों का अभिवादन करते हुए क्षेत्रीय अध्यक्ष ने सभी को आश्वस्त किया कि पार्टी आपके बल पर-2022-का चुनाव लड़ने जा रही है आप सभी लोग कमर कसकर भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करें एक बार फिर योगी आदित्यनाथ की सरकार बनाकर विकास के पथ पर उत्तर प्रदेश को मजबूत करें तथा कार्यक्रम में क्षेत्रीय मंत्री मीना भदौरिया महिला मोर्चा प्रभारी तारा देवी वर्मा उपाध्यक्ष सुषमा केसरवानी शतरूपा पाठक समस्त मंडल अध्यक्षा उपस्थित रहीं।

मंच और हवा में नहीं बल्कि जमीनी हकीकत में बसपा ने किया है विकास : डॉ. नीतू

कौशाम्बी। प्रदेश की सत्ता में आने के बाद जो विकास बहन मायावती ने कर दिखाया है शायद गैर बसपा की सरकारों ने आज तक विकास नहीं किया। हां गैर बसपा सरकारों ने मंच और हवा में विकास की बात जरूर किया है। उक्त बातें बसपा नेत्री मंझनपुर विधान सभा प्रत्याशी डॉ. नीतू कनौजिया ने जन सम्पर्क के दौरान जनता से रूबरू होते हुए कहीं। बसपा नेत्री रविवार को विधान सभा क्षेत्र के विदांव सहित कई गांवों में जन सम्पर्क किया। इस दौरान उन्होंने जनता के साथ चौपाल के दौरान कहा कि बसपा झूंठे वादे नहीं करती है। 2007 का कार्यकाल याद दिलाते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश हो या फिर खुद कौशाम्बी जनपद जितना विकास बहन मायावती की सरकार में कर दिया गया है उतना विकास पूरे पूरे पंद्रह सालों में नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की वर्तमान सरकार के जनप्रतिनिधि सिर्फ मंच से बडे-बडे विकास की बात करते हैं जबकि जमीन में कोई विकास नहीं दिखता है। उन्होंने कौशाम्बी जनपद में विकास को गिनाते हुए कहा कि यहां के लाल सरकार के उच्च पद में विराजमान है इसके बावजूद कौशाम्बी जनपद विकास को तरस रहा है। इस मौके पर पूर्व प्रधान अच्छन मियां, अतुल चौधरी, सुधा देवी, अशोक कुमार, रानी देवी, देवशरन सहित बसपा के पदाधिकारी व सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन चरित्र हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत : अजय सोनी

कौशाम्बी। सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती समर्थ किसान पार्टी के उदहिन बुजुर्ग स्थित कार्यालय में मानाई गई। इस मौके पर पार्टी नेता अजय सोनी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। साथ ही मौजूद रहे लोगों को मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया। इसके पूर्व पार्टी कार्यालय में मौजूद रहे लोगों को संबोधित करते हुए अजय सोनी ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन चरित्र हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत है। हम सबको उनके द्वारा स्थापित आदर्शों पर चलना चाहिए। आगे कहा कि सरदार पटेल देश की एकता और अखंडता के प्रतीक हैं। उनके द्वारा 532 रियासतों का एकीकरण करके देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया गया और देश को मजबूत किया गया।इस मौके पर पार्टी के वरिष्ठ नेता हरिश्चंद्र सिंह पटेल ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल देश के महान नेता थे। उनके द्वारा देश के आंतरिक सुरक्षा के लिए समुचित व्यवस्था की गई। इस मौके पर हीरालाल पटेल, लक्ष्मी सिंह पटेल, मल्हू सिंह पटेल, शिव भवन गौतम, राजू शर्मा, राम पूजन दुबे, शिवम सोनी, टिंकू मौर्य आदि मौजूद रहे।

पांच दशक पूर्व से निकाला जा रहा है भरवारी में रामदल : विधायक संजय गुप्ता

अखंड भारत संदेश

भरवारी राम दल में नगर वासियों के साथ शामिल चायल विधायक संजय गुप्ता

भरवारी कौशाम्बी। श्री रामलीला कमेटी पुरानी बाजार भरवारी के भव्य रामदल का चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता की अगुवाई में रावण वध के बाद गूँजा सियावर रामचन्द्र जी की जय का उद्घोष पांच दसक पूर्व से भी अधिक समय से निकाली जा रही संकट मोचक बजरंगबली की चौकी हनुमंत निकेतन पहुंची। हनुमान निकेतन मंदिर के सामने आचार्य पंडित सुरेंद्र नाथ शुक्ला ने विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने बजरंगबली का वेदमंत्रो के उच्चारण के साथ विधि-विधान से पूर्वक पूजन किया। इस दौरान भरवारी नगर सहित आस-पास के तमाम गणमान्य लोग राम दल में शामिल हुए । तपस्वी वेशधारी मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण, महाबली हनुमान, सुग्रीव व वानर सेना के साथ सवार हुये,दूसरे रथ पर बुराई का प्रतीक लंकेश रावण माता सीता व असुरों के साथ सवार इस तरह रामदल बन जाने के बाद नगर के नन्हें कलाकारों द्वारा सजाई गई दर्जनों झांकिया रामदल के पीछे लगाई गई। आगे-आगे ध्वज-पताका व बैंड-बाजों के साथ तमाम गणमान्य लोग शामिल रहे जय श्री राम का उद्घोष से नगर गुंजायमान हो रहा था। जगह-जगह भक्तों ने चौकी को रोक कर बजरंगबली भगवान की पूजा-आरती की व प्रसाद वितरण किया। रामदल मेहता रोड के बनाए गए रामलीला मैदान मे पहुंचा जहां भीषण युद्ध के बाद लक्ष्मण का शक्ति लगने से घायल होना, श्रीराम का विलाप करना, हनुमान का संजीवनी बूटी लाना, सुषेन वैद्य का लक्ष्मण को पुनः जीवित करना आदि दृश्यों के मंचन के बाद राम-रावण का सीधा युद्ध हुआ जहां श्रीराम ने रावण की नाभि मे तीर मारकर उसे उसके कुकर्मों का दंड दिया। फिर रावण के पुतले मे तीर मारकर उसे आग के हवाले किया। इस प्रकार बुराई पर अच्छाई की विजय का यह दृश्यरावण वध से समाप्त होता है। मेले में तरह-तरह की सजी दुकानों पर लोग ने खूब लुप्त उठाया। मेले के अंदर विशाल झूले पर भारी भीड़ रही। मेले मे फुटकर दुकानों से जमकर खरीदारी किए श्री रामलीला कमेटी की अध्यक्ष सुभाष चंद गुप्ता, महामंत्री संतोष कुमार सोनी व राम लीला कमेटी के मेला संयोजक शंकर लाल केसरवानी,कोषाध्यक्ष सुधीर केसरवानी व पंकज केसरवानी, जीतू केसरवानी, भगवान ?दास कौशल,गोपाल ,भगवान दास कौशल, अतिन केसरवानी , महेंद्र केसरवानी ,राजकुमार केसरवानी रमेश चन्द्र अग्रहरि, गंगा प्रसाद केसरवानी काले, अशोक कुमार केसरवानी , पितांबर लाल ,राजेश अग्रहरि ,हर्ष केसरवानी, यशपाल केसरी , करुणेश त्रिपाठी, सूरज यादव , पवन त्रिपाठी, राहुल मिश्रा सहित सैकड़ों की संख्या में चल रहे दीपावली मेले में जादूगर ज्ञानेंद्र भार्गव कविता पंजाबी सिंगर गुरमीत व दिल्ली से डांस ग्रुप ने उपस्थित लोगों को अपने गायिका से लोगों को खूब थिरकाया। विधायक ने सब को बताया कि यह कार्यक्रम 3 नवंबर तक प्रत्येक दिन नए कलाकार के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएंगे।

पत्नी के साथ मेले में झूला झूल कर विधायक ने लिया आनंद

भरवारी कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने रामलीला मैदान में दंगल में पहुच कर पहलवानो का हाथ मिलाकर पुरानी परंपरा के अनुसार दंगल की सुरुवात कराई दंगल में बनारस पंजाब हरियाणा जालंधर मेरठ दिल्ली प्रयागराज सहित कई प्रांत के पहलवानों ने प्रतिभाग किया इस मौके पर रामलीला कमेटी के अध्यक्ष सुभाष गुप्ता सहित रामलीला कमेटी के समस्त पदाधिकारी गण व दूर दराज से आए हुए लोग मौजूद रहे साथ ही विधायक श्री गुप्ता ने मेले में लगे झूले में अपनी पत्नी सपना गुप्ता के साथ झूला झूल कर मेले का आनंद लिया।

सम्पादकीय

धरती की खातिर

पर्यावरण बचाने के लिए हर साल की तरह इस बार भी दुनिया के तमाम छोटे-बड़े देश ब्रिटेन के ग्लासगो में जुटे हैं। सीओपी (कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज) 26 सम्मेलन में सभी देश एक बार फिर इस मुद्दे पर गहन चर्चा करेंगे कि कार्बन उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य को कैसे हासिल किया जाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि धरती का पर्यावरण लगातार बिगड़ रहा है। वैज्ञानिक और पर्यावरणविद चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले दशकों में वैश्विक तापमान और बढ़ेगा। इसलिए अगर दुनिया अब भी नहीं चेती तो इक्कीसवीं सदी को भयानक आपदाओं से कोई नहीं बचा पाएगा। ग्लासगो में हो रहे इस पर्यावरण सम्मेलन का महत्त्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि अब पर्यावरण बिगाड़ने के जिम्मेदार देशों को भविष्य का खाका तैयार करना है। उन्हें बताना है कि कार्बन उत्सर्जन घटाने के लिए वे क्या करने जा रहे हैं। धरती को बचाने के प्रयासों में सबसे बड़ी मुश्किल यह आ रही है कि अमीर देश अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हटते रहे हैं और कार्बन उत्सर्जन के लिए गरीब मुल्कों को जिम्मेदार ठहराते रहे हैं। इसलिए सम्मेलनों का मकसद कभी पूरा नहीं हो पाता।

दुनिया का शायद ही कोई देश होगा जो जलवायु संकट की मार नहीं झेल रहा होगा। हालांकि यह संकट कोई एकाध दशक की देन नहीं है। पिछली दो सदियों में हुए औद्योगिक विकास की अति ने पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पर पिछले करीब पांच दशकों में यह संकट कहीं ज्यादा गहराया है। इसी का नतीजा है कि अब हम बेमौसम की बारिश, बाढ़, सूखा, धधकते जंगल, पिघलते ग्लेशियर, समुद्रों का बढ़ता जलस्तर और इससे तटीय शहरों और द्वीपों के डूबने के खतरे और बढ़ते वायु प्रदूषण जैसे संकट झेल रहे हैं। कुछ महीने पहले यूरोप के देशों में जैसी बाढ़ आई, वैसी तो कई सदियों में नहीं देखी गई। अमेरिका सहित कई देशों में जंगलों में आग की घटनाएं वायुमंडल में कितनी कार्बन आक्साइड छोड़ रही होंगी, इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। ये घटनाएं हमें चेतावनी दे रही हैं। पर हैरानी की बात की बात यह कि दुनिया के ताकतवर मुल्क सम्मेलनों से आगे नहीं बढ़ पा रहे। धरती को बचाने के लिए काम किसी एक देश को नहीं, बल्कि सबको मिल कर करना है। इसलिए यह जिम्मेदारी सबकी बनती है कि सम्मेलन में जो सहमति बने और समझौते हों, उन पर ईमानदारी से अमल हो। पर व्यवहार में ऐसा देखने में आता कहां है! अमीर देश कार्बन उत्सर्जन में कटौती के लक्ष्य दूसरे देशों पर तो थोप रहे हैं, पर वही इस दिशा में बढ़ने से कननी काट रहे हैं। सवाल है कि आखिर क्यों अमेरिका, ब्रिटेन, चीन जैसे देश अपने यहां कोयले से चलने वाले बिजलीघरों को बंद कर नहीं कर रहे। यह नहीं भूलना चाहिए कि अमेरिका 2017 में पेरिस समझौते से सिर्फ अपने हितों के कारण पीछे हट गया था। कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए विकसित और विकासशील देशों के लक्ष्य भी स्पष्ट होने चाहिए। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए विकासशील देशों को जितना पैसा मिलना चाहिए, वह मिल नहीं रहा। ऐसे में वे अपने यहां उन योजनाओं को लागू ही नहीं कर पा रहे, जिनसे कार्बन उत्सर्जन में कमी लाई जा सकती है। वैश्विक पर्यावरण सम्मेलनों की सार्थकता तभी है जब इसे अमीर बनाम गरीब न बनाया जाए। सारे देश मिल कर साझा एजंडे पर बढ़ें। वरना पर्यावरण बिगाड़ने का ठीकरा गरीब देशों पर फूटता रहेगा और धरती का खतरा बढ़ता जाएगा।

मुद्रास्फीति के बड़े झटके के लिए तैयार रहें

डॉ.अजीत रानाडे

मुद्रास्फीतिजन्य मंदी से बचने के लिए मांग की स्थिति अभी मजबूत हो सकती है। इसका संकेत बैंक ऋणों में वृद्धि से मिलता है। रोजगार भर्ती, अच्छी नौकरियों और श्रम बल की भागीदारी में वृद्धि बढ़ती अर्थव्यवस्था का एक धीमा संकेतक है। यह कुछ ऐसा है जिसे बारीकी से देखा जाना चाहिए। यदि आधारभूत संरचना के खर्च और श्रम केन्द्रित निर्यात क्षेत्रों, सॉफ्टवेयर और आईटी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार में वृद्धि दिखती है तो मुद्रास्फीति को कुछ अंशों में कम किया जा सकता है।अक्टूबर के महीने में स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध ज्यादातर कंपनियां सितंबर में समाप्त होने वाली तिमाही के लिए अपने वित्तीय परिणामों की घोषणा करती हैं। अच्छी खबर यह है कि कम से कम बड़ी कम्पनियों में कॉर्पोरेट मुनाफे में नाटकीय रूप से सुधार हो रहा है। बढ़ी हुई मांग के कारण ज्यादा कीमत मांगी जा रही है जिसकी वजह से लाभ बढ़ रहा है। उपभोक्ता वस्तुओं (यानी खाद्य पदार्थ और धागों), वाशिंग मशीन, टोस्टर, घरों में प्रयुक्त सजावटी सामानों, फैशन, धातुओं, सीमेंट, निर्माण सामग्री, रसायनों जैसे कमोडिटी जैसे क्षेत्रों में काम कर रही कंपनियों के मामले में यह बात सच है। ई-कॉमर्स साइट्स पर इनकी बिक्री फल-फूल रही है। यहां तक कि बैंक भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। आईसीआईसीआई बैंक ने इस तिमाही को सबसे अच्छा बताया है। ऑटोमोटिव सेक्टर का प्रदर्शन भी अच्छा है। महंगी और लक्ज़री चार पहिया वाहनों की मांग ज्यादा तेजी से बढ़ रही है जबकि दो पहिया वाहनों की मांग में गिरावट देखी गई है। यह के शेप्ड वसूली को दर्शाता है। (के शेप्ड इकोनॉमिक रिकवरी तब होती है, जब मंदी के बाद अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग दर, समय या परिमाण में रिकवरी होती है। के-शेप्ड इकोनॉमिक रिकवरी से अर्थव्यवस्था की संरचना में व्यापक परिवर्तन होता है और आर्थिक परिणाम मंदी के पहले तथा बाद में मौलिक रूप से बदल जाते हैं)। के-शेप्ड रिकवरी के ऊपरी हिस्से यानी उच्च आय, शहरी ब्रैकेट और निचले हिस्सा कम आय वाले परिवारों व ग्रामीण क्षेत्रों द्वारा उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं के लाभ उठाने का प्रतीक है। के-शेप का उपरी हिस्सा आबादी के उस खंड का भी प्रतिनिधि है जिसे शेयर बाजार में धन वृद्धि से बेहद लाभ हुआ है।

हालांकि शेयर बाजारों में, विशेष रूप से म्यूचुअल फंड के माध्यम से खुदरा भागीदारी बढ़ रही है लेकिन यह अभी भी उच्च आय वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरीज़ लिमिटेड (एनएसडीएल) में सभी प्रतिभूतियों का मूल्य हाल ही में 4 ट्रिलियन डॉलर को पार कर गया जो जीडीपी (ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट- सकल घरेलू उत्पाद) के आकार से एक तिहाई बड़ा है। इसने नई ऊंचाइयों को छुआ है। बढ़ती मांग और खरीदारी का यह उत्साह त्यौहारों से पहले की तिमाही का है। वास्तविकता अगली तिमाही में सामने आयेगी। यदि वास्तव में आर्थिक गति अच्छी है तो इस दिवाली और क्रिसमस तिमाही में भी अच्छा मुनाफ़ा नजर आना चाहिए। फिर भी, चिंता का साया मंडरा रहा है और कई कंपनियों के अधिकारियों ने इस चिंता को जाहिर किया है जिन्होंने सितंबर में समाप्त तिमाही में अपने अच्छे लाभ की घोषणा की है। शैम्पू से लेकर डिटर्जेंट व आइसक्रीम तक सभी प्रकार के उपभोक्ता वस्तुओं के अग्रणी निर्माता यानी साबुन, तेल, त्वचा की देखभाल और खाद्य उत्पाद बनाने वाली कम्पनी हिंदुस्तान यूनिलीवर के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक ने चेतावनी दी है कि इस समय इनपुट लागत में वृद्धि की गति विगत एक दशक से अधिक समय में सबसे तेज है।

कई अन्य कंपनियों ने भी ऐसी ही चिंता व्यक्त की है। थोक मूल्य सूचकांक (डब्लूयूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति के माध्यम से इनपुट लागत वृद्धि को सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है जो कई महीनों से दोहरे अंकों में चल रहा है। इनमें धातुओं और रसायनों सहित कच्चे माल की परिवहन लागत ऊर्जा (तेल, पेट्रोल, डीजल, कोयला) और आपूर्ति श्रृंखला अवरोधों द्वारा लगाई गई लागत शामिल है जिसे विश्व स्तर पर महसूस किया जा रहा है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (कंज्यूमर प्राईज इंडेक्स- सीपीआई) और थोक मूल्य सूचकांक (होल सेल प्राईज इंडेक्स-डब्लूयूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति के बीच का अंतर बहुत व्यापक है और इस अंतर का कम होना स्वाभाविक है। इसका मतलब है कि उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति निश्चित रूप से बढ़ेगी। एशियन पेंट्स जैसी कंपनियों ने संकेत दिए हैं कि तीसरी तिमाही में उनके उत्पादों की कीमतों में भारी बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है। कई क्षेत्रों की अन्य कंपनियों के उत्पादों में भी ऐसी ही वृद्धि होने की संभावना है।माचिस की डिब्बी की कीमत दोगुनी हो गई है। पिछले सात वर्षों में ऐसा पहली बार हुआ है जब माचिस की डिब्बी की कीमत बढ़ी है। शैम्पू की बोतलों या नूडल्स, टूथपेस्ट, खाद्य तेल के मूल्यों में होने वाली संभावित वृद्धि- यह सब उपभोक्ता मुद्रास्फीति बढ़ाने का काम करने वाली हैं। दरअसल, खुद रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) 2023 से पहले उपभोक्ता मुद्रास्फीति के 4 प्रतिशत के अपने लक्ष्य तक पहुंचने के बारे में अनिश्चित है। लगभग दो वर्षों के लिए भारत की सीपीआई मुद्रास्फीति 6 प्रतिशत या उससे ऊपर रही है जो आरबीआई द्वारा दी गई अनुमति की सीमा का सर्वोच्च है। अमेरिका भी 5.5 प्रतिशत की रिकॉर्ड उपभोक्ता मुद्रास्फीति का सामना कर रहा है और यूरोप में भी यही स्थिति है। वहां सदिय्रों में घरों को गर्म रखने के लिए उपयोग में आने वाली गैस और तेल की कीमतें भी काफी बढ़ी हैं। खाद्य एवं कृषि संगठन का कहना है कि इस समय वैश्विक खाद्य मूल्य सूचकांक पिछले सात साल में सबसे ज्यादा है। एनर्जी, मेटल, फाइबर और केमिकल्स के आंकड़े दर्शाने वाले ब्लूमबर्ग कमोडिटी प्राइस इंडेक्स में भी तेजी से बढ़ोतरी हुई है। समुद्री मार्गों से माल की ढुलाई लागत अभी भी बहुत अधिक है और इसके ऐसे ही बने रहने की उम्मीद है। इन सभी को इनपुट लागत कहा जाता है लेकिन अभी या बाद में यह उपभोक्ता मुद्रास्फीति में शामिल हो जायेगा। इनपुट लागत पर और दबाव डालने के लिए उच्च राजकोषीय घाटे भी हैं जिन्हें कम करने के लिए उच्च करों की (जैसे भारत में पेट्रोल और डीजल पर) आवश्यकता होती है जो केवल मुद्रास्फीति को बढ़ाते हैं। अच्छी कृषि फसलों से इस उच्च लागत की भरपाई नहीं हो सकती। कोविड-19 की दूसरी लहर की तरह मुद्रास्फीति अचानक हमला कर सकती है। मुद्रास्फीति लगातार नहीं बढ़ती और इसके बढ़ने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है; और यदि मजदूरी लागत टेढ़ी-मेढ़ी गति से बढ़ती है (सरकार ने पहले से ही डीए दरों में संशोधन किया है) तो मुद्रास्फीति के जिन्न को वापस बोतल में डालना आसान नहीं होगा। शेयर बाजार को महंगाई की आशंका ने पहले ही परेशान कर दिया है। कुछ निचले स्तर के सुधार शुरू हो चुके हैं। एक आरबीआई सर्वे के अनुसार, महंगाई के दो अंकों तक बढ़ने की आशंका है। यह एक बार उच्च स्तर पर पहुंच गई तो इसे नीचे लाना मुश्किल है। जब लोग अधिक सोना खरीदना शुरू करते हैं तो यह मुद्रास्फीति की चिंता का एक अन्य संकेतक होता है। यदि सोने की कीमत बढ़नी शुरू होती है तो यह उस मांग को इंगित करता है जो बढ़ती कीमतों के खिलाफ बचाव हो सकती है परन्तु यह आबादी के अमीर और छोटे वर्ग द्वारा उठाया जाने वाला कदम है। दूसरी ओर सोने की बिक्री के लिए कई संकट पैदा हो गए हैं। स्वर्ण का ऋण के रूप में उपयोग में पिछले एक साल में 62 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई है। यह अपर्याप्त आय का संकेत देता है। स्वर्ण ऋण का उपयोग बच्चों की शिक्षा, शादियों, बीमारी के लिए या घर के खर्चों को पूरा करने के लिए किया जाता है। यदि आय में वृद्धि यानी सकल घरेलू उत्पाद मुद्रास्फीति के साथ अपेक्षाकृत अधिक तालमेल रखता है तो नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद में तेजी से वृद्धि होगी। तब राजस्व पर कर लगेगा। इससे राजकोषीय स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन अगर आय में वृद्धि की गति धीमी रहती है पर मुद्रास्फीति अधिक रहती है तो हमें मुद्रास्फीतिजनित मंदी की स्थिति का सामना करना पड़ेगा। संभावना है कि मुद्रास्फीतिजन्य मंदी से बचने के लिए मांग की स्थिति अभी मजबूत हो सकती है। धीमा संकेतक है। यह कुछ ऐसा है जिसे बारीकी से देखा जाना चाहिए। यदि आधारभूत संरचना के खर्च और श्रम केन्द्रित निर्यात क्षेत्रों, सॉफ्टवेयर और आईटी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार में वृद्धि दिखती है तो मुद्रास्फीति को कुछ अंशों में कम किया जा सकता है।

सुन लो दुनिया के हुक्मरान ! ना बदला था, ना बदला है और ना बदलेगा तालिबान

अशोक मधुप

अभी रूस ने अफगानिस्तान के मुद्दे पर वार्ता की मेजबानी की। इसमें तालिबान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत ने भी बात की। भारत ने सहायता का आश्वासन भी दिया। चीन ने युद्धग्रस्त देश अफगानिस्तान को 10 लाख अमेरिकी डॉलर उपलब्ध कराए हैं। अफगानिस्तान के कब्जे के दो माह बाद भी तालिबान का रवैया वही है, जो बीस साल पहले था। खस्ता हाल और भूखे देश को चलाने के लिए उसे मदद चाहिए, वह भी अपनी शर्तों पर। अफगानिस्तान के हालात को लेकर दुनिया भर के देश चिंतित हैं। सब चाहते हैं कि अफगानिस्तान में विकास हो। बाकी जनता की समस्याएं हल हों। हालात सामान्य हों। लोगों को भरण-पोषण की चीजें उपलब्ध हों। पर अफगानिस्तान पर काबिज तालिबान अपने एजेंडे से पीछे हटने को तैयार नहीं है। उसका क्रूरता का चेहरा वैसा ही है जैसा बीस साल पहले था। उसने उस पर कोई मुखौटा नहीं लगाया। कोई आवरण नहीं ओढ़ा। उनको दुनिया से अपने लिए मदद चाहिए, वह भी अपनी शर्तों पर। उन्हें न मानवता से कुछ लेना है, न मानव समाज से। अभी रूस ने अफगानिस्तान के मुद्दे पर वार्ता की मेजबानी की। इसमें तालिबान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत ने भी बात की। भारत ने सहायता का आश्वासन भी दिया। चीन ने युद्धग्रस्त देश अफगानिस्तान को 10 लाख अमेरिकी डॉलर उपलब्ध कराए हैं। तालिबान के प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद ने बताया कि चीन ने यह आर्थिक मदद दी है और मानवीय मदद (विशेष रूप से भोजन और दवाओं के लिए) के तौर पर पांच लाख अमेरिकी डॉलर और उपलब्ध कराने का वादा भी किया है। अफगानिस्तान की आर्थिक हालात ठीक नहीं है। वहां भोजन का संकट है। पेट भरने के लिए लोग अपनी बेटियां तक बेच रहे हैं। वहां न जरूरत का सामान है, न ठंड से बचने के लिए कपड़े। इस हालात से दुनिया अफगानिस्तान की जनता के बारे में सोच रही है। चिंता कर रही है। किंतु अफगानिस्तान पर काबिज तालिबान का रवैया कुछ और ही कहता है। उनके आचरण से लगता है कि पिछले 20 साल में उन्होंने अपने में कोई बदलाव नहीं किया। उनका एजेंडा वही है। वे कट्टर इस्लामवाद से पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। सत्ता पर कब्जा करने के बाद तालिबान ने मान्यता पाने के लिए सभी धर्मों को साथ लेकर चलने का दावा किया था। लेकिन अब अल्पसंख्यकों के लिए वहां सुरक्षा हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। तालिबान ने वहां रहने वाले सिखों को फरमान जारी करते हुए कहा है कि या तो इस्लाम कुबूल कर लो या फिर देश छोड़ दो। इतना ही नहीं इस्लाम कबूल न करने पर जान से मारने की धमकी दी जा रही है। तालिबान ने सत्ता संभालते ही जेल में बंद सभी कैदियों को रिहा कर दिया। अब ये रिहा कैदी उन्हें सजा देने वाले न्यायधीश को खोज रहे हैं। न्यायधीश अपनी जान बचाते घूम रहे हैं। अफगानिस्तान से भागी 26 महिला जज ग्रीस में शरण लिए हैं। अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद लगा था कि चीन, पाकिस्तान और रूस तथा आसपास के कुछ इस्लामिक देश उसे तुरंत मान्यता दे देंगे। पाकिस्तान तो इस अभियान के लिए सक्रिय भी हुआ। इतना सब होने के दो माह बाद भी अब तक एक भी देश तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दे सका। इसका सबसे बड़ा कारण यह रहा कि अमेरिका से वार्ता में उसने वायदा किया था कि वह देश में मौजूद सभी संगठनों को साथ लेकर सरकार बनाएगा। अफगानिस्तान से सटे देश चाहते हैं कि अफगानिस्तान में शांति रहे। वहां की जनता को जरूरत की चीज आराम से मिलती रहे, किंतु यह सब आपके, मेरे चाहने और सोचने से होने वाला नहीं है। उसके लिए तो तालिबान को ही अपने रवैये में परिवर्तन करना होगा। उसे ही अपने को इस योग्य बनाना होगा कि दुनिया स्वयं सहायता के लिए आगे आए।

अपने बच्चों को मौका देते हैं और दूसरों को सजा

उमेश कुमार गुप्ता

बीते सितंबर महीने में राष्ट्रीय मानवधिकार आयोग ने एक 15 वर्षीय नाबालिग को नशीली दवा रखने के आरोप में सुधार गृह के बजाय जेल भेजे जाने और तीन महीने बाद जमानत पर रिहा होने के बाद उस लड़के के आत्महत्या किए जाने के मामले का स्वतः संज्ञान लिया। यह घटना उत्तर प्रदेश के एटा जनपद की है। लड़के को एटा पुलिस ने नशीली दवाओं के कब्जे के संबंध में गिरफ्तार किया था और उसे किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश करने के बजाय जिला जेल भेज दिया गया था। आयोग ने इस मामले में पुलिस, न्यायिक अधिकारी और डॉक्टर की भूमिका पर भी सवाल उठाया है। यह पूरा मामला अपराध करने वाले बच्चों के मामले में पुलिस, न्याय व्यवस्था और समाज के एकतरफा दृष्टिकोण की एक बानगी भर है। हम में से शायद ही कोई ऐसा हो जिसने बचपन में गलतियां न की हों। उनमें से कुछ गलतियां ऐसी होती हैं जो हमें ताउम्र याद रहती हैं। एक कार्यशाला में एक पुलिस अधिकारी बता रहे थे कि उन्होंने बचपन में एक बार मक्के के खेत में से एक भुट्टा चुरा लिया। खेत मालिक ने उन्हें तो जलील किया ही, उनके पिताजी को भी बहुत खरी खोटी सुनाई। आज 30 वर्ष बीत जाने के बाद भी उन्हें उस व्यक्ति का चेहरा जस का तस याद है और उसके लिए उनके मन में नफरत भरी हुई है। उसी कार्यशाला में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने भी एक वाकया सुनाया। उन्होंने बताया कि एक बार वह एक रेस्ट्रॉन्ट में अपने परिवार के साथ खाना खाने गए। तब उनका बेटा 8 साल का रहा होगा। उनका बेटा रेस्ट्रॉन्ट में कहीं घूम कर आया और उन्हें अपनी पैंट की जेब में पड़े बहुत से सिक्के दिखाने लगा। उन्होंने उससे पूछा कि ये सिक्के कहां से मिले तो उसने बताया कि छोटा सा एक मंदिर है रेस्ट्रॉन्ट में, वहीं से वह ये सारे सिक्के उठा लाया है। उन्होंने उसे समझाया। रेस्ट्रॉन्ट के मालिक को सारा प्रकरण बताया और किसी तरह उनके बेटे ने वे सिक्के वापस किए। यहां इस वाकये को बताने के पीछे मंशा यह थी कि अगर यही काम किसी गरीब बच्चे ने किया होता तो पहले तो रेस्ट्रॉन्ट के लोग ही उसे बुरी तरह पीटते और फिर पुलिस भी उस पर जमकर हाथ साफ करती। इस कार्यशाला में विशेष किशोर पुलिस इकाई के नोडल अधिकारियों को किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम पर प्रशिक्षण दिया जा रहा था। अक्सर हमें कम उम्र में ही बच्चों द्वारा किए जाने वाले अपराधों और समाज तथा पुलिस द्वारा उन्हें प्रताड़ित किए जाने की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं। अगर किशोर न्याय अधिनियम की बात करें तो यह बच्चों को अपराधी मानने के बजाय उन्हें ऐसी गलतियां दोबारा न करने और सुधार का मौका देने की भावना पर आधारित है। हां, उस पर अमल में बहुत सारी दिक्कतें हैं।यह सभी जानते हैं कि कोई भी बच्चा अपराधी पैदा नहीं होता है। फिर समाज, समुदाय और परिवार में वे कौन सी चीजें हैं जो उसे अपराध करने की ओर धकेलती हैं इस पर विचार करने के बजाय छोटे-मोटे अपराधों के लिए सुधारगृह और जेल भेजने का शॉर्टकट अपनाने के पीछे व्यवहार में मजबूरियां चाहे जो भी हों, उससे हालात को बेहतर बनाने में कोई मदद नहीं मिल रही।पुलिस अधिकारियों की कार्यशाला का जिक्र पहले किया ही है, इसके साथ ही जरूरत न्यायिक अधिकारियों की भी क्षमता में वृद्धि का इंतजाम करने की है। ऐसे कई प्रकरण सामने आते हैं जिनमें संवेदनशीलता या समझदारी की कमी के चलते बच्चों की उम्र को बढ़ा कर दिखा दिया जाता है और उसे वयस्क कैदियों के साथ जेल में रहने को बाध्य किया जाता है। जिस संवेदनशीलता के साथ हम अपने बच्चों को सुधर जाने का अवसर प्रदान करते हैं उसी तरह का सहानुभूतिपूर्ण नजरिया इन बच्चों के मामलों में भी रख सकें तो बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न होने से पहले ही सुलझ जाएं।

पेट्रोल-डीजल दाम बढ़ने के पीछे की असल वजह

ज़ाहिद ख़ान

खाद्य पदार्थों और तमाम बुनियादी ज़रूरत के सामान के दाम पेट्रोल-डीजल के दामों से तय होते हैं। क्योंकि जब ट्रांसपोर्टेशन महंगा होगा, तो स्वाभाविक है इनके दाम भी बढ़ेंगे। पेट्रोल-डीजल के दामों पर नियंत्रण से ही महंगाई कंट्रोल होती है। जिसकी दिशा में सरकार कोई काम नहीं कर रही है। आलम यह है कि देश में पेट्रोल की क़ीमतें कई राज्यों में 110 रुपये प्रति लीटर का आंकड़ा पार कर गई हैं, तो डीजल ने भी 100 रुपये प्रति लीटर का आंकड़ा छू लिया है। हर महीने ये क़ीमतें महंगाई का एक नया रिकॉर्ड बना रही हैं। पिछले साल मई महीने से लेकर अब तक पेट्रोल के दाम में 36 रुपए, तो डीजल के दाम में 26 रुपए से ज़्यादा की बढ़ोतरी हुई है। देश में बढ़ती महंगाई हमेशा एक मुद्दा रही है, लेकिन जिस तरह की महंगाई आज दरपेश है, वैसे हालात कभी देखने में नहीं आये। खाद्य पदार्थों दाल, चावल, शक्कर और तेल से लेकर हर बुनियादी ज़रूरत के सामान के दाम आसमान छू रहे हैं। आम तो आम ख़ास जन भी बढ़ती हुई महंगाई से बेहाल और परेशान हैं। सबसे बुरा हाल मिडिल क्लास का है। उसकी जो आमदनी है, वह तो वहीं की वहीं ठिठकी खड़ी है, लेकिन ख़र्चे दिन-पे-दिन बढ़ते जा रहे हैं। कोविड-19 महामारी से जैसे-तैसे वह उबरा, लेकिन महंगाई की मार से वह जो डूबा, तो उसे कहीं किनारा नज़र नहीं आ रहा है। सरकार से शिकायत करो, तो वह इस महंगाई का सारा ठीकरा पेट्रोल-डीजल के सिर यह कहकर फोड़ देती है, क्या करें अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल के दाम बढ़ रहे हैं। भक्तजन भी भक्ति भाव में यह सब बातें स्वीकार लेते हैं।

लेकिन जो लोग थोड़े से भी समझदार हैं, उन्हें यह तर्क गले नहीं उतरता। ज़्यादा दिन नहीं बीते हैं, जब अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल के दाम अपने सबसे निचले स्तर पर आ गए थे। यहां तक कि कच्चा तेल आयात करने के लिए मोदी सरकार को केवल ट्रांसपोर्टेशन का ही ख़र्चा देना पड़ रहा था। बावजूद इसके देशवासियों को इसका कोई फ़ायदा नहीं मिला। उस वक्त भी उन्हें पेट्रोल-डीजल महंगे दाम पर ही ख़रीदना पड़ा। उनसे यह कहकर कुर्बानी मांगी गई कि वे जो पेट्रोल-डीजल पर ज़्यादा ख़र्च कर रहे हैं, उस पैसे का इस्तेमाल सरकार कोरोना महामारी और देश की सीमाओं पर दुश्मन से लड़ने में कर रही है। अब जब अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल के दामों ने रफ़्तार पकड़ ली है, तो सरकार ने अपने हाथ खड़े कर दिए हैं। वह नये-नये शब्दजालों से जनता को भरमाने का काम कर रही है। महंगाई उसके लिए कोई मुद्दा नहीं है। खाद्य पदार्थों और तमाम बुनियादी ज़रूरत के सामान के दाम पेट्रोल-डीजल के दामों से तय होते हैं। क्योंकि जब ट्रांसपोर्टेशन महंगा होगा, तो स्वाभाविक है इनके दाम भी बढ़ेंगे। पेट्रोल-डीजल के दामों पर नियंत्रण से ही महंगाई कंट्रोल होती है। जिसकी दिशा में सरकार कोई काम नहीं कर रही है। आलम यह है कि देश में पेट्रोल की क़ीमतें कई राज्यों में 110 रुपये प्रति लीटर का आंकड़ा पार कर गई हैं, तो डीजल ने भी 100 रुपये प्रति लीटर का आंकड़ा छू लिया है। हर महीने ये क़ीमतें महंगाई का एक नया रिकॉर्ड बना रही है। पिछले साल मई महीने से लेकर अब तक पेट्रोल के दाम में 36 रुपए, तो डीजल के दाम में 26 रुपए से ज़्यादा की बढ़ोतरी हुई है। पेट्रोल-डीजल के दाम क्यों बढ़ रहे हैं, यह रॉकेट साइंस नहीं जो समझ में न आए। केंद्र सरकार, एक्साइज़ ड्यूटी के नाम पर जनता से जो पैसा वसूल करती है, उसने ही सबसे अधिक पेट्रोल-डीजल के दाम बिगाड़े हैं। मोदी सरकार ने जब से केन्द्र की सत्ता संभाली है, पेट्रोल पर उत्पाद कर तीन गुना बढ़ गया है। साल 2014 में पेट्रोल पर प्रति लीटर एक्साइज ड्यूटी 9.48 रुपये थी, जो अब 32 रुपये से अधिक है। वहीं डीज़ल पर तो उत्पाद कर में दस गुना इजाफ़ा हुआ है। डीजल पर एक्साइज ड्यूटी 3.56 रुपये से बढ़कर 32 रुपये के पार पहुंच गई है। इसी साल मार्च 2021 में तत्कालीन केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने संसद को अपने लिखित जवाब में जो आंकड़े पेश किए, उसके मुताबिक बीते छह सालों के दौरान पेट्रोल और डीज़ल से होने वाली केंद्र सरकार की कमाई में क़रीब 300 फ़ीसदी का इज़ाफ़ा हुआ है।

पेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोतरी का सिफ़ऱ्यही एक अकेला कारण नहीं है। केन्द्र सरकार की एक्साइज ड्यूटी के अलावा इन पर राज्य सरकारें, वैल्यू ऐडेड टैक्स यानी वैट भी लगाती हैं। यह वैट भी कोई कम नहीं। इसी साल 26 जुलाई को केंद्रीय तेल मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने लोकसभा में बताया था कि सबसे ज्यादा वैट मध्य प्रदेश सरकार पेट्रोल पर लेती है। जो 31.55 रुपये प्रति लीटर है। वहीं डीज़ल पर सबसे ज्यादा वैट राजस्थान सरकार लेती है, जो 21.82 रुपये प्रति लीटर है। राज्य सरकारें वैट के साथ-साथ कई बार कुछ अन्य टैक्स भी जोड़ देती हैं। मसलन ग्रीन टैक्स, टाउन रेट टैक्स वगैरह-वगैरह। एक लिहाज़ से कहें, तो पेट्रोल और डीज़ल केंद्र और राज्य सरकार दोनों के लिए कमाई का मोटा ज़रिया बने हुए हैं। बीते सात सालों में इनसे सरकारों ने 22 लाख करोड़ रुपये की कमाई की है। अगर केन्द्र और राज्य सरकारें चाहें, तो उत्पाद कर और वैट को कम करके जनता को एक बड़ी राहत दे सकती हैं। लेकिन इस दिशा में कोई किसी भी तरह की पहलक़दमी नहीं कर रहा। केन्द्र में जब संप्रग सरकार सत्ता में थी, तो बीजेपी नेता अक्सर सरकार को पेट्रोल-डीजल के दामों में कटौती के लिए, उत्पाद कर को कम करने की सलाह देते थे। लेकिन जब यही मांग विपक्षी पार्टियां उनसे कर रही हैं, तो मोदी सरकार को जैसे सांप सूंघ गया है। जब भी सरकार से यह मांग होती है, वह बढ़ते राजकोषीय घाटे की दुहाई देने लगती है। उसकी ओर से तरह-तरह के कुतर्क आने लगते हैं कि इसी शुल्क की वजह से जनता को फ्री कोरोना वैक्सीन और राशन आदि मिल रहा है। पेट्रोल डीजल के दाम बढ़ने के पीछे मोदी सरकार, एक तर्क और देती है। यूपीए सरकार के दौरान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने तेल कंपनियों को ऑयल बॉण्ड जारी किए थे। इन बॉण्ड के भुगतान के वास्ते उसे मजबूरी में जनता से ज़्यादा एक्साइज ड्यूटी लेना पड़ रही है। सरकार की इस दलील में कितनी सच्चाई है, इसकी भी पड़ताल ज़रूरी है। इसके लिए हमें आज से दो दशक पीछे जाना होगा। तेल की बढ़ती कीमतें आम जनता पर बोझ न बनें, इसके लिए केंद्र सरकार पहले सब्सिडी दिया करती थी। अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल की कीमतें चाहे जो भी हों, देश में सरकारें अपने मुताबिक उसे कंट्रोल करती थीं। इसके लिए पूर्ववर्ती सरकारों ने तेल कंपनियों को ऑयल बॉण्ड जारी किए। सिफ़ऱ्यूपीए सरकार ने ही नहीं, बीजेपी के नेतृत्व में राजग सरकार ने भी यह काम किया। ऑयल बॉण्ड, होते क्या हैं इसे भी जानना लाज़िमी है। ऑयल बॉण्ड वो सिक्योरिटी होती हैं, जिसे सरकारें नकद सब्सिडी के बदले तेल कंपनियों को दिया करती हैं। ये बॉण्ड अमूमन लंबी अवधि के होते हैं। तेल कंपनियों को इन पर ब्याज़ भी चुकाया जाता है। अपने राजकोष पर बोझ डाले बग़ैर केंद्र की यूपीए सरकार ने साल 2005 से लेकर 2010 तक तेल कंपनियों को ऑयल बॉण्ड जारी किए। ताकि तत्कालीन सरकार को नकद नहीं खर्च करना पड़े। लेकिन दुनिया भर में आई आर्थिक मंदी के बाद, जब यूपीए सरकार ने पेट्रोल की कीमतों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर दिया, तो ऑयल बॉण्ड जारी किया जाना जून, 2010 से ख़त्म हो गया। सरकारी नियंत्रण समाप्त करने का अर्थ था कि जैसे-जैसे अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में तेल की कीमतें बढ़ेंगी, देश में तेल कंपनियां उसी हिसाब से उनकी कीमतें बाज़ार में तय करेंगी। सरकार के इस फ़ैसले के बाद तेल की कीमतों का बोझ सीधे नागरिकों के कंधों पर आ गया। साल 2014 में केंद्र में सत्ता परिवर्तन हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सत्ता में आए। मोदी सरकार ने मनमोहन सरकार से दो कदम और आगे बढ़ते हुए, उसी साल अक्टूबर में डीज़ल को भी सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर दिया।

यूपीए सरकार के दौरान जारी किए गए ऑयल बॉण्ड के भुगतान की तो मोदी सरकार और उसके तमाम सिपहसालार बार-बार दुहाई देते हैं, लेकिन पेट्रोल और डीज़ल पर एक्साइज़ ड्यूटी से सरकार के ख़जाने में कितना पैसा आ रहा है , इसके बारे में देशवासियों को कुछ नहीं बतलाते। मोदी सरकार ने अपने कार्यकाल के पहले ही साल यानी 2014-15 के दौरान एक्साइज ड्यूटी से पेट्रोल पर 29,279 करोड़ रुपये और डीज़ल पर 42,881 करोड़ रुपये की कमाई की थी। इसी साल मार्च में लोकसभा में पूछे गए एक सवाल के जवाब में तत्कालीन केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने अपने लिखित जवाब में बताया था कि वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 10 महीनों के दौरान पेट्रोल और डीज़ल पर टैक्स से कमाई बढ़कर 2.94 लाख करोड़ रुपए हो गई है। एक तरफ़ पेट्रोल और डीज़ल पर एक्साइज़ ड्यूटी से सरकार के ख़जाने में बेशुमार पैसा आ रहा है, तो दूसरी ओर सरकार ऑयल बॉण्ड का रोना रो रही है। जबकि हिसाब लगाएं, तो ऑयल बॉण्ड का सरकार पर कोई ज़्यादा बोझ नहीं है। सरकार को 1.31 लाख करोड़ रुपये के ऑयल बॉण्ड के मूलधन के रूप में तेल कंपनियों को देने हैं, इसमें ब्याज़ को भी यदि जोड़ लें, तो यह रक़म दोगुनी हो सकती है। यानी उसकी देनदारी तकरीबन 2.62 लाख करोड़ रुपये होगी। जो आंकड़ा निकलकर आ रहा है, वह मोदी सरकार द्वारा दस महीने में टैक्स से हुई कमाई से कम है। इस बात से यह साबित होता है कि यूपीए सरकार के दौरान जारी किए गए ऑयल बॉण्ड, पेट्रोल-डीज़ल की बढ़ती कीमतों के लिए कतई ज़िम्मेवार नहीं। मोदी सरकार की नीयत में ही कहीं ख़ोट है। इस बारे में वह लगातार ग़लतबयानी कर देशवासियों को गुमराह करने का काम कर रही है। जबकि हकीकत कुछ और है। सरकार को देशवासियों के दुःख-दर्द, तकलीफ़ों का जरा सा भी ख्याल होता, तो वह फ़ौरन पेट्रोल-डीजल पर एक्साइज़ ड्यूटी कम करती। जिसका सीधा-सीधा असर पेट्रोल-डीजल के दामों पर पड़ेगा और देशवासियों को महंगाई से बड़ी राहत मिलेगी।

विराट कोहली के परिवार को धमकी मिलने से दुखी इंजमाम उल हक ने आलोचकों को लताड़ा, बोले- अपनी सीमा में रहो

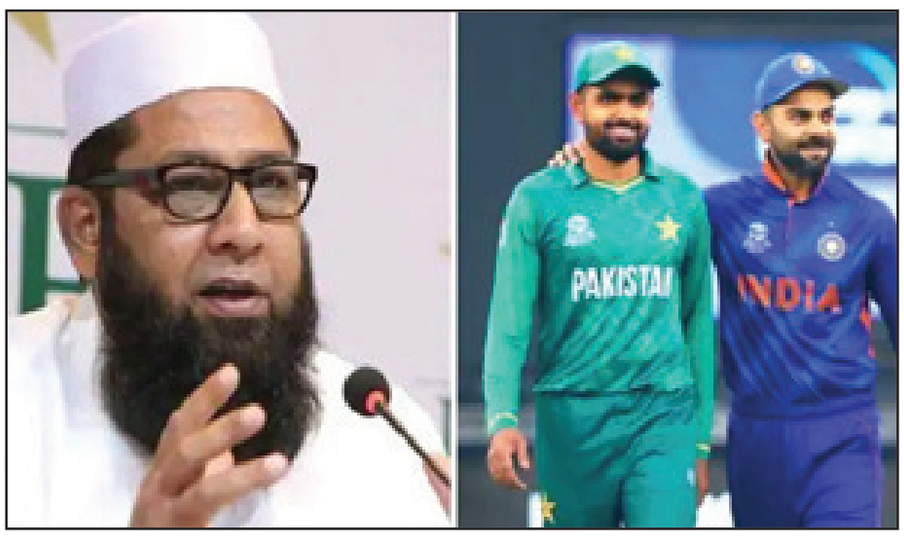

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने अपने ऑलराउंड प्रदर्शन की बदौलत दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले गए आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के सुपर 12 स्टेज के ग्रुप 2 मुकाबले में विराट कोहली की कप्तानी वाली भारतीय टीम को एकतरफा अंदाज में आठ विकेट से करारी मात दी। इस हार के बाद भारत के सेमीफाइनल में पहुंचने की संभावनाओं को गहरा धक्का लगा है। इसके अलावा कोहली की कप्तानी पर भी सवाल उठने लगे हैं। भारतीय टीम के शर्मनाक प्रदर्शन के बाद कोहली आलोचकों के निशाने पर आ गए हैं और सोशल मीडिया पर लगातार उन पर निशाना साधा जा रहा है। इस बीच, ऐसी भी खबरें आ रही है कि कई यूजर्स ने कोहली के परिवार को भी धमकी दी है। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान इंजमाम उल हक कोहली के परिवार को धमकी मिलने से काफी दुखी हैं। इंजमाम ने कहा है कि लोगों को आलोचना करने का अधिकार है, लेकिन उन्हें अपनी सीमा में रहना चाहिए।

इंजमाम ने अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए कहा, मैंने सुना है कि विराट कोहली की बेटी को धमकियां दी जा रही हैं। लोगों को समझने की जरूरत है कि यह सिर्फ एक खेल है। हम अलग-अलग देशों के लिए खेल रहे हैं लेकिन हम एक ही कम्युनिटी का हिस्सा हैं। आपको कोहली की बल्लेबाजी या उनकी कप्तानी की आलोचना करने का पूरा अधिकार है, लेकिन किसी को भी क्रिकेटर के परिवार को निशाना बनाने का हक नहीं है। पूर्व कप्तान ने मोहम्मद शमी को लेकर भी कहा, कुछ दिन पहले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। जीत और हार खेल का एक हिस्सा है। लोगों द्वारा कोहली के परिवार को निशाना बनाए जाने से मुझे बहुत दुख हुआ है।.

पूर्व पाकिस्तानी कप्तान ने आगे कहा कि वह भारतीय बल्लेबाजों को स्ट्राइक रोटेट करने के लिए संघर्ष करते देखक हैरान हैं। उन्होंने कहा, टूर्नामेंट में यह एक महत्वपूर्ण मैच था। शायद भारत-पाकिस्तान मैच के बाद सबसे अहम मुकाबला था। भारतीय टीम जिस तरह से खेली, उसे देखकर मैं काफी हैरान था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि भारतीय टीम खुद पर इतना दबाव कैसे ले सकती है। मैंने टीम इंडिया को इस तरह खेलते हुए कभी नहीं देखा। न्यूजीलैंड के दोनों स्पिनर अच्छे हैं, लेकिन उनमें से कोई भी विश्व स्तरीय स्पिनर नहीं है। फिर भी भारतीय बल्लेबाज सिंगल लेने के लिए जूझ रहे थे।

महेंद्र सिंह धोनी की टीम के इस धुरंधर स्पिनर ने बताया, टी20 वर्ल्ड कप में क्यों हार रही है टीम इंडिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के अनुभवी स्पिनर इमरान ताहिर ने युजवेंद्र चहल को यूएई में जारी आईसीसी टी20 विश्व कप 2021 की टीम से बाहर रखने पर हैरानी जताई और कहा कि यह लेग स्पिनर अपनी विविधतापूर्ण गेंदबाजी से कुछ मिनटों में मैच का पासा पलट सकता है। विराट कोहली की अगुवाई वाली टीम का लगातार दो हार से टी20 विश्व कप में अभियान अच्छा नहीं रहा और इसके लिए चयन पर भी उंगली उठाई जा रही है।

इनमें चहल का भारतीय टीम में चयन नहीं करना भी शामिल है। मिस्ट्री स्पिनर वरुण चक्रवर्ती भारतीय टीम में शामिल है, लेकिन टूर्नामेंट में अबतक उनका प्रदर्शन काफी निराशाजनक रहा है और पहले दो मैचों में उनके खाते में एक भी सफलता नहीं आई है। ताहिर आईपीएल में महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में चेनन्ई सुपर किंग्स टीम में खेलते हैं। ताहिर ने वर्चुअल मीडिया बातचीत में कहा, वह (चहल) शानदार गेंदबाज है। मैं निजी तौर पर उन्हें टी20 विश्व कप में देखना चाह रहा था लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें नहीं चुना गया। लेग स्पिनर विविधतापूर्ण गेंदबाजी करते हैं। केवल गुगली या लेग ब्रेक ही नहीं, वे टॉप स्पिनर, फ्लिपर और स्लाइडर भी करते हैं। लेग स्पिनर बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। बल्लेबाज अब वैसा नहीं खेल सकते जैसे वे 10 साल पहले खेला करते थे। श्रेय सभी स्पिनरों और क्षेत्ररक्षण की सजावट को जाता है।

न्यूजीलैंड के लेग स्पिनर ईश सोढ़ी ने भारत के खिलाफ रविवार को 17 रन देकर रोहित शर्मा और विराट कोहली के विकेट लिए जिसके लिए उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया। ताहिर ने कहा, पूर्व में एक लेग स्पिनर के तौर पर दक्षिण अफ्रीका के लिए और लीग क्रिकेट में खेलने के कारण मेरा मानना है कि एक लेग स्पिनर दो-तीन विकेट जल्दी निकालकर तुरंत ही मैच का पासा पलट सकता है।

भारत की नाक में दम करने वाले ईश सोढ़ी ने इस खिलाड़ी को दिया जीत का क्रेडिट

दुबई (एजेंसी)। बाएं हाथ के स्पिनर मिशेल सैंटनर ने टी-20 वर्ल्ड कप मैच में न्यूजीलैंड की भारत के खिलाफ जीत में भले ही विकेट हासिल नहीं किया, लेकिन उनके साथी ईश सोढ़ी का मानना है कि उनकी कसी हुई गेंदबाजी से विरोधी टीम के बल्लेबाजों पर दबाव बनाने में मदद मिली। न्यूजीलैंड के गेंदबाजों ने भारतीय बल्लेबाजों को खुलकर नहीं खेलने दिया और उसे 110 रन पर आउट कर दिया। न्यूजीलैंड ने इस अपेक्षाकृत छोटे लक्ष्य को 14.3 ओवर में हासिल कर दिया। लुधियाना में जन्मे सोढ़ी ने विराट कोहली और रोहित शर्मा के कीमती विकेट लिए।उन्होंने कहा कि बीच के ओवरों में सैंटनर के स्पैल से अन्य गेंदबाजों को मदद मिली। सोढ़ी ने मैच के बाद प्रेस कान्फ्रेंस में कहा, जिस तरह से उसने (सैंटनर) आज गेंदबाजी की, उससे उन्होंने बीच के ओवरों में दबाव बनाया। हम सभी गेंदबाजों ने उस दबाव का फायदा उठाया और उसके योगदान को निश्चित तौर पर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इस लेग स्पिनर ने पाकिस्तान से पहले मैच में हार के बाद भारत के खिलाफ आठ विकेट की जीत को विशेष बताया। सोढ़ी को उम्मीद नहीं थी कि न्यूजीलैंड को इतनी आसान जीत मिलेगी।उन्होंने कहा, आप इस तरह के मैचों में ऐसी टीम के खिलाफ उतरते हो, जिसके पास वर्ल्ड क्लास खिलाड़ी हों जैसे कि भारत के पास हैं और पिछले कुछ सालों में उनका हमारे खिलाफ शानदार रिकॉर्ड रहा है। वह किसी भी तरह की परिस्थिति में बेहद कड़ा प्रतिद्वंद्वी है और इसलिए यह जीत विशेष है। सोढ़ी ने कहा, पाकिस्तान के खिलाफ हार के बाद खिलाड़ी अच्छी तरह से एकजुट हुए। उसके बाद इस तरह की जीत दर्ज करना, निश्चित तौर पर आप इसे हल्के से नहीं ले सकते।

मेरा अब भी मानना भारत एक बेस्ट टीम, पाकिस्तान के तेज गेंदबाज ने टीम इंडिया की जमकर तारीफ की

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में लगातार दो हार झेलने के बाद टीम इंडिया और उसके खिलाड़ियों की आलोचना का सिलसिला जारी है। सोशल मीडिया पर विराट सेना की खूब खिल्ली उड़ रही है। फैन्स से लेकर क्रिकेटर तक भारतीय टीम और टूर्नामेंट में उसके प्रदर्शन पर तंज कस रहे हैं। हालांकि कुछ क्रिकेटरों का अब भी मानना है कि भारत अब भी दुनिया की एक बेस्ट टीम है और यह टीम अच्छे से वापसी करना जानता है। पाकिस्तान के धुरंधर तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर ने भी टीम इंडिया का सपोर्ट करते हुए कहा है कि यह सिर्फ क्रिकेट का एक खेल है। भारत को टूर्नामेंट के पहले मैच में पाकिस्तान से 10 विकेट से जबकि दूसरे मैच में न्यूजीलैंड से 8 विकेट मात खानी पड़ी है।

आमिर ने भारतीय टीम के सपोर्ट में ट्वीट करते हुए लिखा, मैं अब भी मानता हूं कि भारत एक बेस्ट टीम है, यह सिर्फ अच्छे समय और बुरे समय की बात है। लेकिन खिलाड़ियों और उनके परिवार को गाली देना शर्म की बात है। यह मत भूलिए कि अंत में यह सिर्फ क्रिकेट का खेल है।लगातार दो मैच हारने के बाद भारत के सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदों का झटका लगा है। साथ ही कोहली की लीडरशिप पर भी सवाल उठने लगे हैं। कोहली इस टूर्नामेंट के बाद टी-20 फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ रहे हैं, लेकिन न्यूजीलैंड के खिलाफ मिली हार के बाद वनडे कप्तान के तौर पर भी उनके भविष्य पर भी सवाल उठेंगे। न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत के अधिकांश बल्लेबाज आसान कैच देकर आउट हुए। भारतीय पारी में 54 डॉट गेंदें रही यानी कुल नौ ओवरों में रन ही नहीं बने। पिच में कोई खराबी नहीं थी लेकिन भारतीय बल्लेबाजों ने कीवी स्पिनरों के आगे घुटने टेक दिए।

वानिंदु हसरंगा ने हासिल की बड़ी उपलब्धि, एक कैलेंडर इयर में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बने

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के ग्रुप-1 में आज इंग्लैंड का सामना श्रीलंका से हो रहा है। शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए जा रहे इस मुकाबले में श्रीलंका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। मुकाबले में श्रीलंका के स्टार स्पिनर वानिंदु हसरंगा ने शानदार गेंदबाजी करते हुए एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। मुकाबले में दो विकेट झटकने के साथ ही हसरंगा ने एक कैलेंडर इयर में सर्वाधिक विकेट लेने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। हसरंगा ने चार ओवर में 21 रन देकर तीन विकेट अपने नाम किए। उन्होंने वनडे डेब्यू में और इस टी 20 विश्व कप में भी हैट्रिक ली थी। हसरंगा ने इंग्लैंड के बल्लेबाज जेसन रॉय और जॉनी बेयरस्टो को आउट करके पवेलियन भेजा और एक कैलेंडर इयर में सर्वाधिक विकेट लेने का रिकॉर्ड अपने नाम किया। रॉय 6 गेंदों पर 9 रन बनाकर आउट हुए तो वहीं बेयरस्टो अपना खाता भी नहीं खोल सके। इससे पहले एक कैलेंडर इयर में सर्वाधिक विकेट लेने का रिकॉर्ड दक्षिण अफ्रीका तबरेज शम्सी के नाम था। शम्सी ने शनिवार को ही श्रीलंक के खिलाफ यह रिकॉर्ड बनाया था। इस दौरान उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज एंड्रयू टाय का तीन साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा था।इससे पहले, 2021 में टी20 इंटरनेशनल में शम्सी एक कैलेंडर इयर में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज थे। उन्होंने 2021 कैलेंडर इयर में सबसे ज्यादा 32 विकेट चटकाए थे। शनिवार 30 अक्टूबर को श्रीलंका के खिलाफ हुए मैच में उन्होंने भानुका राजपक्षे, अविष्का फर्नांडो और वनिंदु हसरंगा को आउट किया था।

पूर्व क्रिकेटर का हैरानी भरा बयान

बोले- विराट-अश्विन के रिश्तों में दरार, इसलिए ऑफ स्पिनर को नहीं मिल रही जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में लगातार दो हार झेलने के बाद भारतीय टीम की प्लेइंग इलेवन पर सवाल उठने लगे हैं। भारत को टूर्नामेंट के अपने पहले मैच में पाकिस्तान ने 10 विकेट से पीटा था जबकि दूसरे मैच में न्यूजीलैंड के हाथों उसे 8 विकेट से करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा। दो हार के बाद भारतीय टीम का सेमीफाइनल में पहुंचना मुश्किल लग रहा है। टीम की हार के बाद कप्तान विराट कोहली की भी काफी आलोचना हो रही है। साथ ही दोनों मैच में अनुभवी ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन को प्लेइंग इलेवन में मौका नहीं मिलने को लेकर भी क्रिकेटर्स कोहली और टीम की आलोचना कर रहे हैं। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर निक कॉम्पटन ने इस मामले में एक हैरानी भरा दिया है। कॉम्पटन का मानना है कि कोहली और अश्विन के बीच के रिश्ते में खटास के कारण अनुभवी ऑफ स्पिनर को प्लेइंग इलेवन में मौका नहीं मिल रहा है।

कॉम्पटन ने भारत की हार के बाद ट्वीट करते हुए लिखा, मुझे नहीं समझ आ रहा है कि कैसे कप्तान विराट कोहली के साथ अनफ्रेंडली रिलेशन के कारण अश्विन को टीम में जगह नहीं मिल रही। क्या आपको लगता है कप्तानों को इतनी पॉवर मिलनी चाहिए। अश्विन की चार साल बाद लिमिटेड ओवरों के क्रिकेट में वापसी हुई है, लेकिन आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के पहले दोनों मैचों में उन्हें प्लेइंग इलेवन में नहीं खिलाया गया। उनकी जगह मिस्ट्री स्पिनर वरुण चक्रवर्ती को दोनों मैचों में शामिल किया गया। लेकिन चक्रवर्ती का विकेटों का खाता अभी खुला नहीं है। इससे पहले, इंग्लैंड के खिलाफ खेली टेस्ट सीरीज के दौरान भी अश्विन को प्लेइंग इलेवन में नहीं चुना गया था। भारत ने इस दौरान चार टेस्ट मैच खेले थे, लेकिन अश्विन को प्लेइंग इलेवन में शामिल नहीं किया गया था। हाल में ऐसी खबरें आई थी कि वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल के बाद जिस खिलाड़ी ने सचिव जय शाह से विराट कोहली के रवैये को लेकर शिकायत की थी वो अश्विन ही थे। हालांकि बाद में चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे के नाम भी सामने आए थे।

कपिल देव ने विराट कोहली के इस कमेंट पर भारतीय कप्तान को जमकर लताड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पहले वर्ल्ड कप विजेता कप्तान कपिल देव ने आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में सुपर 12 के ग्रुप 2 मैच में न्यूजीलैंड के हाथों भारत की आठ विकेट की हार के बाद कप्तान विराट कोहली के उस कमेंट्स की कड़ी आलोचना की है, जिसमें कोहली ने मैच के बाद कहा था कि हम पर्याप्त साहस नहीं दिखा पाए। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मैच में न्यूजीलैंड ने टीम इंडिया को 8 विकेट से करारी शिकस्त दी। न्यूजीलैंड ने 111 रन के लक्ष्य को 14.3 ओवर में 2 विकेट खोकर हासिल कर लिया। इस हार से टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली काफी निराश दिखे। उन्होंने बताया कि टीम इंडिया को मिली हार की वजह खिलाड़ियो का खराब प्रदर्श रही। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी बल्ले और गेंद दोनों से साहस का प्रदर्शन नहीं कर सके।

कोहली का यह बयान कपिल देव के गले नहीं उतर रहा है और उनका मानना है कि यह आखिरी बात है जो एक कप्तान को कहना या महसूस करना चाहिए। कपिल देव ने एबीपी न्यूज चैनल पर कहा, उनके जैसे बड़े खिलाड़ी के लिए, यह एक बहुत ही कमजोर बयान है।

भारत की हार से आहत वीरेंद्र सहवाग ने कहा- टीम जरूर बदली, लेकिन उसकी किस्मत नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में सुपर 12 के ग्रुप 2 में लगातार दो हार झेलने के बाद टीम इंडिया अब मझधार में फंसती दिखाई दे रही है। रविवार को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में न्यूजीलैंड के हाथों भारत की आठ विकेट की हार के बाद टीम की प्लेइंग इलेवन को लेकर सवाल उठने लगे हैं। भारतीय टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने भी न्यूजीलैंड के खिलाफ प्लेइंग इलेवन को लेकर टीम मैनेजमेंट पर निशाना साधा है। भारतीय टीम कीवी टीम के खिलाफ अपने अहम मुकाबले में दो बदलाव के साथ उतरी थी और इसके बाद भी उसे करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा। इस हार से टीम के लिए सेमीफाइनल की राह काफी मुश्किल हो गई है।सहवाग ने फेसबुक पर बातचीत के दौरान कहा कि विराट कोहली की टॉस हारने की आदत ने भारतीय क्रिकेट टीम की संभावनाओं को प्रभाव डाला है। कोहली न्यूजीलैंड के खिलाफ टॉस हार गए और टीम को मजबूरी में बल्लेबाजी के लिए उतरना पड़ा। सहवाग ने आगे कहा कि भले ही कोहली ने प्लेइंग इलेवन में दो बदलाव किए, लेकिन टीम की किस्मत नहीं बदली। उन्होंने कहा, हर टॉस की शुरुआत में 50-50 की संभावना होती है, लेकिन कोहली के टॉस जीतने की संभावना निराशाजनक है। भारतीय टीम में 2 बदलाव हुए लेकिन भारत की किस्मत में कोई बदलाव नहीं हुआ। पूर्व विस्फोटक बल्लेबाज ने आगे कहा कि वह इस हार से इसलिए ज्यादा आहत है क्योंकि टीम ने बिना लड़े ही हथियार डाल दिए। सहवाग ने कहा, मै भारत के प्रदर्शन से पूरी तरह निराश हूं क्योंकि हारना एक पहलू है लेकिन बिना लड़े, इस तरह से हारना निराशाजनक है।

शिक्षकों ने बच्चों को मटर-पनीर खिलाकर मनाई दीपावली

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। विकास खंड ज्ञानपुर के प्राथमिक विद्यालय विश्वनाथपुर, उच्च प्राथमिक विद्यालय सोबरी, प्राथमिक विद्यालय सोबरी, कंपोजिट विद्यालय हरदोपट्टी एवं कंपोजिट विद्यालय मुंगरी का बीईओ ने आज औचक निरीक्षण किया।ज्ञानपुर के खंड शिक्षा अधिकारी रवींद्र शुक्ल ने सभी विद्यालयों के निरीक्षण के दौरान कायाकल्प के कार्यों, शैक्षिक स्थिति, स्टाफ की उपस्थिति, उपस्थिति पंजिका, रसोईघर, मिड डे मील का वितरण आदि के संबंध में जानकारी ली और भौतिक सत्यापन भी किया।कंपोजिट विद्यालय मुंगरी में एमडीएम के तहत सोमवार को सब्जी-रोटी एवं फल का मेन्यू निर्धारित है, जिसके तहत आज दीपावली पर्व के पूर्व विद्यालय परिवार द्वारा पनीर एवं हरी मटर की सब्जी बनवाई गई थी। इसके अलावा रोटी एवं फल भी बांटा गया। बीईओ ने इस पहल के लिए विद्यालय परिवार की सराहना की। विद्यालय में कुल नामांकन 232 के सापेक्ष 100 बच्चे उपस्थित थे।

जिम्मेदारी निभाएं, निर्वाचन प्रक्रिया में सहभागी बनें : जिलाधिकारी

विधानसभा निर्वाचक नामावली के विशेष पुनरीक्षण अभियान का आगाज

अखंड भारत संदेश

भदोही। निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान का आज आगाज किया गया। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी, सीडीओ भानुप्रताप सिंह ने केएनपीजी कालेज में मां वीणापाणि के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर प्रोग्राम का शुभारंभ किया।

जिलाधिकारी ने उपस्थित सभी छात्राओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया और केएनपीजी सभागार में उपस्थित सभी लोगों को स्वस्थ मतदान से संबंधित शपथ दिलाई। जिलाधिकारी महोदया ने सभी छात्र-छात्राओं से आह्वान किया कि आप सभी भारत के भविष्य हैं। सभी को निर्वाचन प्रक्रिया में हिस्सा लेना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले मतदाता बनना अति आवश्यक है। जिनकी उम्र एक जनवरी 2022 को 18 वर्ष पूरी हो रही है, वह फार्म 6 भरकर बीएलओ के माध्यम से अपना नाम मतदाता सूची में अंकित करवाएं। जेंडर रेशियो को बढ़ाने के लिए महिला मतदाताओं को अधिक से अधिक पंजीकरण कराने के लिए प्रोत्साहित किया।

मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम का आगाज, 40 छात्राओं ने किया आवेदन

जिलाधिकारी ने सभी बच्चों से अपील किया कि वह अपने आसपास के लोगों कोभी इसके संबंध में जागरुक करें। बताया कि माहभर चलने वाले अभियान के दौरान नाम जोड़े, कटवाए और संसोधित करवाए जा सकते है।सीडीओ ने कहा कि भारत एक ऐसा लोकतांत्रिक देश है, जहां सभी को मत देने का अधिकार है। इसलिए इसका प्रयोग हमें अवश्य करना चाहिए, इसके लिए मतदाता बनना आवश्यक है। मुख्य विकास अधिकारी/नोडल अधिकारी स्वीप भानु प्रताप सिंह ने बताया कि सात नवंबर, 13 नवंबर, 21 नवंबर और 27 नवंबर को विशेष अभियान चलाया जाएगा। सभी लोग इसका लाभ उठाएं। उन्होंने सभी से वोटर हेल्पलाइन एप डाउनलोड करने की अपील की। आज 40 छात्राओं का फॉर्म 6 भराया गया, शेष सभी अन्ह छात्राओं को फार्म 6 शीघ्र भराकर उनका नाम मतदाता सूची में दर्ज कराया जाएगा। इस दौरान छात्रों ने नुक्कड़ नाटक का भी मंचन किया गया। कार्यक्रम में एसडीएम प्रियंका, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय, प्राचार्य पीएन डोंगरे एवं संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भारत के वैक्सीन सर्टिफिकेट को 5 और देशों ने दी मान्यता, अब 35 देशों की यात्रा हुई आसान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय विदेश मंत्रालय का कहना है कि पांच और देशों ने भारत के टीकाकरण प्रमाण पत्र को मान्यता दे दी है। इन देशों नें एस्टोनिया, किर्गिस्तान, फिलिस्तीन, मॉरीशस और मंगोलिया शामिल हैं। ये जानकारी भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने ट्वीट करके दी। इसके साथ ही अब 35 देशों की यात्रा आसान हो गई है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने ट्वीट किया कि पांच और देश भारत के टीकाकरण प्रमाण पत्र को मान्यता दे दी है। जिसमें एस्टोनिया, किर्गिस्तान, फिलिस्तीन राज्य, मॉरीशस और मंगोलिया शामिल हैं। इन देशों में भारत में वैक्सीनेशन के बाद यात्रा कर सकेंगे।

वहीं, आस्ट्रेलियाई सरकार ने भारत बायोटेक की कोरोना वैक्सीन कोवैक्सीन को मान्यता दे दी है। भारत में आस्ट्रेलिया के उच्चायुक्त बैरी ओफेरेल एओ ने इसकी जानकारी दी है। उनके मुताबिक, आस्ट्रेलियाई सरकार ने यात्रियों के टीकाकरण स्टेटस के उद्देश्य से भारत बायोटेक की कोवैक्सीन को मान्यता दे दी है। इसका मतलब हुआ कि अब कोई भी यात्री जिसने कोवैक्सीन की डोल ली तो वह आस्ट्रेलिया की यात्रा कर सकता है। बता दें कि आस्ट्रेलिया और पांच अन्य देशों के अलावा दुनिया के 30 से अधिक देशों से भारत के वैक्सीनेशन सर्टिफिकेट को मान्यता दी है। इन देशों में जर्मनी, फ्रांस, नेपाल, बेलारूस, आर्मेनिया, लेबनान, यूक्रेन, बेल्जियम, हंगरी और सर्बिया शामिल हैं। इससे पहले विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने अक्टूबर माह में कहा था जिन देशों ने भारत के टीकाकरण को मान्यता दी है, उन देशों में प्रवेश के लिए भारतीय यात्रियों को वैक्सीनेशन सर्टिफिकेट दिखाना होगा और जाने का मकसद भी बताना होगा।

कई शहरों में पेट्रोल के दाम 120 के पार, राहुल गांधी बोले- जेबकतरों से सावधान

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश इन दिनों पेट्रोल-डीजल सहित रसोई गैस की बढ़ी हुई कीमतों से परेशान है। करीब-करीब हर दिन दाम बढ़ रहे हैं। देश के कुछ शहरों में तो पेट्रोल की कीमत प्रति लीटर 120 रुपए को पार कर गई है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बढ़ती महंगाई को लेकर केंद्र सरकार पर परोक्ष रूप से हमला किया है। उन्होंने कहा है, जेबकतरों से सावधान! राहुल गांधी लगातार अपने ट्वीट और बयानों के जरिए केंद्र सरकार को घेरते रहते हैं। आज उन्होंने पेट्रोल-डीजल की बढ़ी हुई कीमत पर ट्वीट करते हुए लिखा है, जेबकरतों से सावधान!

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के उच्च स्तर पर रहने के बीच घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में इस महीने के पहले दिन सोमवार को लगातार छठेवें दिन उबाल जारी रहा। सरकारी तेल विपणन कंपनियों ने इन दोंनों की कीमतों में 35-35 पैसे प्रति लीटर की बढोतरी की जिसके बाद राजधानी दल्ली में पेट्रोल 109.69 रुपये प्रति लीटर और डीजल 98.42 रुपये प्रति लीटर के सर्वकालिक रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया।

अक्टूबर में 31 दिनों में से 24 दिन इन दोनों की कीमतों में बढोतरी हुयी थी और उस दौरान पेट्रोल 7.70 रुपये प्रति लीटर और डीजल 8.30 रुपये प्रति लीटर महंगा हो गया था। आज को मिलाकर 25 दिनों में पेट्रोल 7.85 रुपये और डीजल 8.65 रुपये प्रति लीटर महंगा हो चुका है। देश में झारखंड में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में अंतर समाप्त होने के करीब पहुंच गया है। आज की बढ़त के बाद प्रदेश की राजधानी रांची में पेट्रोल और डीजल के बीच मात्र तीन पैसे का अंतर बचा है। यदि कल फिर इनकी कीमतों में बढोतरी होगी तो डीजल पेट्रोल को पीछे छोड़ सकता है। अभी पेट्रोल 103.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 103.83 रुपये प्रति लीटर पर है। इस बढ़त के बाद मुंबई में पेट्रोल 115.50 रुपये और डीजल 106.62 रुपये प्रति लीटर, मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में पेट्रोल सबसे महंगा 118.46 रुपये प्रति लीटर और डीजल 107.90 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 113.45 रुपये और डीजल 105.07 रुपये प्रति लीटर, बेंगलुरू में पेट्रोल 113.56 रुपये और डीजल 104.50 रुपये प्रति लीटर पर पहुंच गया है। कोलकाता में भी पेट्रोल के 110.15 रुपये प्रति लीटर और डीजल 101.56 रुपये प्रति लीटर पर पहुंच चुका है। दल्ली एनसीआर के नोएडा में पेट्रोल 106.85 रुपये और डीजल 99.12 रुपये प्रति लीटर पर है।

अभी देश के सभी प्रमुख शहरों में पेट्रोल की कीमत 110 रुपये प्रति लीटर को पार कर चुकी है। अधिकांश शहरों में डीजल भी शतक लगा चुका है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल अभी भी ऊंचे स्तर पर। सप्ताह के पहले दिन सोमवार को सिंगापुर में कच्चे तेल कारोबार नरमी के साथ शुरू हुआ। ब्रेंट क्रूड 0.35 प्रतिशत टूटकर 83.43 डॉलर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड 0. 47 प्रतिशत गिरकर 83.18 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। लंदन ब्रेंट और अमेरिकी क्रूड में बहुत कम का अंतर रह गया है।

कैप्टन की तरह चन्नी के फैसले पर भी सवाल उठा रहे सिद्धू, बोले- बजट आवंटन किए बिना घोषणा कर रहे सीएम

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब कांग्रेस प्रमुख नवजोत सिंह सिद्धू के तेवर नहीं बदले हैं। वह जैसे पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को लगातार उनके फैसलों और उनकी नीतियों को लेकर घेर रहे थे, ठीक उसी तरह वर्तमान मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के फैसले पर भी लगातार सवाल उछा रहे हैं। चन्नी पर तंज कसते हुए सिद्धू ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा की जा रही घोषणाओं के लिए कोई बजटीय प्रावधान नहीं है। आपको बता दें कि सिद्धू के इस तरह के बयान से उनकी पार्टी और सरकार लगातार असहज हो रही है।

कांग्रेस पार्टी बार-बार यह साबित करने में जुटी है कि उसकी पंजाब इकाई में सबकुछ ठीक चल रहा है लेकिन प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू लगातार ऐसे बयान दे रहे हैं जिससे साफ है कि पंजाब कांग्रेस की कलह बरकरार है।

सिद्धू ने आज यह भी कहा कि जिसने भी दावा किया कि पंजाब का खजाना खाली नहीं है, वह झूठ बोल रहा है। इससे पहले सिद्धू ने तीखे तेवर दिखाते हुए कहा था कि वह असली मुद्दों पर डटे रहेंगे और इनसे ध्यान नहीं हटने देंगे। इससे पहले सिद्धू ने पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखकर मांग की थी कि वह चनने सरकार को 13 मुद्दों पर काम करने के निर्देश दें। पंजाब में नई सरकार के गठन के बाद सिद्धू केसी वेणुगोपाल और हरीश रावत जैसे पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से दिल्ली में मुलाकात की थी। इस दौरान भी सिद्धू ने एक 18 सूत्रीय एजेंडा को लेकर अपनी चिंताएं जाहिर की थी और कहा था कि इनपर कार्रवाई की जाए। इसमें साल 2015 के गुरुग्रंथ साहिब बेअदबी केस के आरोपियों के खिलाफ एक्शन और ड्रग्स माफियाओं पर कार्रवाई भी शामिल

8 नवंबर से सभी सरकारी दफ्तरों में बायोमेट्रिक हाजिरी लागू

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने 8 नवंबर से सभी स्तरों के कर्मचारियों के लिए बायोमेट्रिक उपस्थिति फिर से शुरू करने का फैसला किया है। कार्मिक मंत्रालय ने एक कार्यालय ज्ञापन में कहा कि यह विभाग के प्रमुखों की जिम्मेदारी होगी कि वे कोरोनावायरस के प्रसार को रोकने के लिए निवारक उपाय सुनिश्चित करें। इन उपायों में बायोमेट्रिक मशीनों के पास अनिवार्य रूप से सैनिटाइजर रखना होगा। कार्मिक मंत्रालय ने ज्ञापन में कहा है कि कर्मचारियों को उपस्थिति दर्ज करने से पहले और बाद में अपने हाथों को साफ करना चाहिए। उन्हें अपनी उपस्थिति को चिह्नित करते हुए छह फीट की शारीरिक दूरी बनाए रखनी चाहिए और यदि आवश्यक हो तो भीड़भाड़ से बचने के लिए अतिरिक्त बायोमेट्रिक उपस्थिति मशीनें लगाई जाएं। सभी कर्मचारियों को हर समय मास्क या फेस कवर पहनना आवश्यक है। एएनआई के मुताबिक, ज्ञापन में कहा गया है कि जहां तक संभव हो बायोमेट्रिक स्कैनर के टचपैड या स्कैनर क्षेत्रों

को बार-बार साफ करने या पोंछने के लिए कोई कर्मचारी मौके पर तैनात किया जाए। कार्यालय ज्ञापन में कहा गया है कि पर्याप्त प्राकृतिक वेंटिलेशन बनाए रखे जाने चाहिए और सभी कर्मचारी वायरस से बचाव के लिए अलर्ट रहेंगे। जहां तक संभव हो, बैठकें वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से की जाएं और अतिथियों के साथ व्यक्तिगत बैठकें अतिआवश्यक होने पर ही की जाए। बता दें कि कार्मिक मंत्रालय ने इस साल 14 जून को कम कर्मचारियों के साथ उपस्थिति को विनियमित करने के निर्देश जारी किए थे। कुछ श्रेणियों के कर्मचारियों को कार्यालयों में उपस्थित होने से छूट दी गई थी, जो इस साल 30 जून तक लागू थे। कोविड-19 को ध्यान में रखते हुए बनाई गई शर्तों के कारण अगले आदेश तक उपस्थिति रजिस्टर बनाए रखने के निर्देश के साथ बायोमेट्रिक उपस्थिति को निलंबित कर दिया गया था। ज्ञापन में कहा गया है, ठइस मामले की समीक्षा की गई और 8 नवंबर 2021 से सभी स्तर के कर्मचारियों के लिए बायोमेट्रिक उपस्थिति फिर से शुरू करने का निणय्र लिया गया है।

ग्लासगो सम्मेलन से निकलेगा हल जलवायु खतरों से निपटने को लेकर जी-20 देशों के पास नहीं है कोई ठोस रणनीति

नई दिल्ली (एजेंसी)। जलवायु वार्ता से पूर्व जी-20 देशों ने सदी के अंत तक तापमान बढ़ोत्तरी को डेढ़ डिग्री तक सीमित रखने पर सहमति तो प्रकट की है। लेकिन इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए उनके पास अभी भी ठोस रणनीति का अभाव है। लक्ष्य को हासिल करने के लिए जी-20 देशों को कई मुद्दों पर स्पष्टता प्रकट करने की जरूरत थी जो कि उनके द्वारा नहीं की गई। जलवायु विशेषज्ञों के अनुसार जी-20 देशों की घोषणा में लक्ष्य एवं दृष्टि का अभाव साफ नजर आता है। जी-20 देश वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के करीब 75 फीसदी हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए उनके द्वारा उठाए जाने वाले कदम जलवायु खतरों से निपटने में निर्णायक साबित होंगे। लेकिन जी-20 देशों की डेढ़ डिग्री पर सहमति की घोषणा लुभावनी है लेकिन वे इसका रास्ता नहीं बता रहे। सिर्फ यह कहा गया है कि सदी के मध्य तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल किया जाएगा। लेकिन इसमें 2050 की समय सीमा रखने से परहेज किया गया है क्योंकि चीन समेत कई देशों के लक्ष्य 2060 के हैं। इस प्रकार पूरा जोर दीर्घकालिक लक्ष्यों के निर्धारण पर रहा है। कम अवधि के 2030 के लक्ष्यों को लेकर स्पष्टता नहीं है। इसके अलावा जी-20 देशों ने निणय्र लिया है कि वे देश के बाहर कोयले पर निवेश नहीं करेंगे। लेकिन देश के भीतर निवेश पर रोक पर कोई पाबंदी नहीं है। इसी प्रकार जलवायु खतरों से निपटने के लिए कोयले से पैदा होने वाली बिजली पर निर्भरता खत्म करने पर जोर दिया जा रहा है। लेकिन जी-20 देशों का घोषणापत्र इस मुद्दे पर चुप है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि वह शून्य कार्बन उत्सर्जन का ऐलान करते हैं तो उन्हें कोयले के इस्तेमाल को बंद करने की समय सीमा निर्धारित करनी चाहिए। जो नहीं की गई है।

इसी प्रकार जीवाश्म ईंधन पर दी जा रही सबसिडी को खत्म करने को लेकर भी जी-20 देशों की तरफ से कोई रोडमैप तैयार नहीं किया गया है।

फ्रांस की धमकियों पर ब्रिटेन का रुख अडिग, कहा- पीछे नहीं हटेंगे

लंदन (एजेंसी)। ब्रेक्जिट के बाद ब्रिटेन और फ्रांस के बीच मछली पकड़ने से संबंधित नए विवाद के समाधान के लिए सोमवार को भी बहुत संकेत नहीं मिले। इससे एक दिन पहले की फ्रांस ने ब्रिटिश नौकाओं और ट्रकों पर रोक लगाने की धमकी दी थी। ब्रिटिश विदेश मंत्री लिज ट्रस ने फ्रांस को चेतावनी दी कि पेरिस की अनुचित धमकियों पर ब्रिटेन पीछे नहीं हटेगा। दोनों देशों ने एक-दूसरे पर ब्रेक्सिट के बाद के व्यापार समझौते का उलंघन करने का आरोप लगाया है। ब्रिटेन ने यूरोपीय संघ के साथ व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए थे जो इस साल की शुरुआत में लागू हुआ था। फ्रांस ने धमकी दी है कि अगर अधिक संख्या में फ्रांसीसी जहाजों को मंगलवार तक ब्रिटेन के जल क्षेत्र में मछली मारने के लिए लाइसेंस नहीं दिया जाता है तो वह अपने कुछ बंदरगाहों से ब्रिटिश नौकाओं को प्रतिबंधित करेगा और ब्रिटिश माल ढोने वाली नौकाओं तथा ट्रकों की कड़ी जांच की जाएगी।पेरिस ने यह भी कहा कि वह चैनल द्वीप समूह ब्रिटिश क्राउन को ऊर्जा आपूर्ति पर प्रतिबंध लगा सकता है। यह द्वीप समूह फ्रांस के तट के पास स्थित है और बहुत हद तक फ्रांसीसी बिजली पर निर्भर है। ट्रस ने बीबीसी रेडियो से कहा, फ्रांस को उन धमकियों को वापस लेने की जरूरत है अन्यथा हम कार्रवाई करने के लिए यूरोपीय संघ के समझौते के तहत विवाद समाधान प्रणाली का उपयोग करेंगे।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025